NIEPA DC
D08431

निरक्षरता से संघर्ष

खंड- 2

प्रौढ़ शिक्षा संबंधी सफलता की कहानियों का संग्रह

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration,
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016 D-8431
DOC, No .....
Date 17-1-95

अंग्रेजी आलेख एवम संपादन : जी. शिवास्वामी
उप संपादन एवं प्रूफ : आशीष कुमार सिंह
डिज़ाइन और आर्टवर्क : एल.सी. वोहरा
फोटो : जी.डी. शर्मा
हिंदी अनुवाद : विवेक चन्द्र शर्मा

प्रस्तावना

''निरक्षरता से संघर्ष'' का प्रथम खंड अक्तूबर, 1987 में प्रकाशित हुआ था। आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, उड़ीसा और तमिलनाडु की सफलता की कहानियों का संग्रह प्रस्तुत करने का यह पहला प्रयास था। यह प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय के कैमरा दल द्वारा किए गए इन राज्यों के दौरे पर आधारित था। इस प्रकाशन को उन सभी लोगों ने पसंद किया और सराहा जो प्रौढ़ शिक्षा के काम से जुड़े हुए हैं।

इस परिणाम से प्रेरणा पाकर पिछले कुछ वर्षों के दौरान प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय ने कुछ और राज्यों में भी कैमरा दल भेजा जिसमें बिहार, कर्नाटक, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल शामिल हैं। इस दल के मुखिया श्री जी. शिवास्वामी, उप निदेशक, प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय थे। इस दल ने इन राज्यों के कई जिलों का दौरा किया और अपने साथ प्रचुर सामग्री लाया। क्षेत्र से आने के बाद अधिकांश कहानियां ''साक्षरता मिशन'' में पहले ही प्रकाशित की जा चुकी हैं। ''साक्षरता मिशन'' पत्रिका का पहले नाम ''प्रौ शि नि समाचार'' था।

अब इस दूसरे खंड में बिहार, कर्नाटक, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल की उन सभी कहानियों को एक ही स्थान पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ताकि देश भर के प्रौढ़ शिक्षा कार्यकर्ता और दूसरे लोग इनसे लाभ उठा सकें। आशा है कि वे प्रथम खंड की तरह ही इस प्रकाशन को भी रोचक पाएंगे और देश के दूसरे भागों में क्या कुछ हो रहा है इसकी जानकारी पाने के साथ साथ अपनी कुछेक समस्याओं को सुलझाने में भी इसे उपयोगी पाएंगे।

मैं सर्वश्री जी. शिवास्वामी, उप निदेशक, एल.सी. वोहरा, वरिष्ठ कलाकार, और जी.डी. शर्मा, फोटोग्राफर को और प्रकाशन एकक के दूसरे सभी सदस्यों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने यह प्रकाशन निकालने और इसे आकर्षक ढंग से सजाने और मुद्रित करने में अपना योगदान किया।

यह इस माला की केवल दूसरी कड़ी है। हम आने वाले वर्षों में इस प्रयास को आगे बढ़ाना चाहते हैं। अतः मैं पाठकों से अनुरोध करूंगा कि वे अपने विचार और सुझाव भेजें ताकि इस प्रकाशन को अधिक उपयोगी बनाया जा सके।

नई दिल्ली
30 जून, 1989

अनिल. के. सिन्हा
निदेशक

भूमिका

"निरक्षरता से संघर्ष" के प्रथम एवं द्वितीय खंड के क्रमशः अक्तूबर 1987 और जून 1989 में प्रकाशन के बाद से ही यह पुस्तिका साक्षरता के क्षेत्र में काम कर रहे स्वयंसेवकों के बीच काफी लोकप्रिय हुई। न केवल पठन सामग्री की दृष्टि से वरन साज सज्जा, छायाचित्रों एवं मुद्रण की दृष्टि से भी लोगों ने इसे सराहा। अतएव प्रथम खंड का हिंदी संस्करण हिंदी भाषा भाषी राज्यों के लिए सितंबर 1988 में प्रकाशित किया गया जो कि अंग्रेजी संस्करण के समान ही पसंद और सराहा गया। इसी से उत्साहित होकर हमने "निरक्षरता से संघर्ष" के द्वितीय खंड का हिंदी संस्करण प्रकाशित करने का प्रयास किया है। हालांकि इसके हिंदी संस्करण के प्रकाशन में कुछ देरी हो गई है लेकिन हम यह महसूस करते हैं कि साक्षरता के प्रचार प्रसार के लिए प्रौढ़ शिक्षाकर्मियों द्वारा देश के सुदूर और दुर्गम क्षेत्रों में किए गए प्रयास को आम लोगों तक पहुंचाया जाना चाहिए जिससे जहां एक ओर उनका उत्साह बढ़े वहीं दूसरी ओर अन्य लोग भी लाभान्वित हो सकें।

मैं सर्वश्री जी. शिवास्वामी, उप निदेशक (प्रकाशन), विवेक चंद शर्मा, हिंदी अधिकारी, आशीष कुमार सिंह, तकनीकी सहायक (प्रकाशन) एल.सी. वोहरा, वरिष्ठ कलाकार, जी.डी. शर्मा, छायाकार और प्रकाशन एकक के दूसरे सभी सदस्यों का आभारी हूं और उन्हें धन्यवाद देता हूं जिनके सहयोग से इस पुस्तिका का प्रकाशन संभव हो सका।

यह इस माला की दूसरी कड़ी है परंतु आखिरी नहीं। हम अपने इस प्रयास को जारी रखना चाहते हैं जिसके लिए हमें आपके सुझाव एवं विचारों की जरूरत है। हमें उम्मीद है कि आपका सहयोग और विश्वास बराबर मिलता रहेगा।

नई दिल्ली
24.4. 92

अशोक कुमार बासु
निदेशक

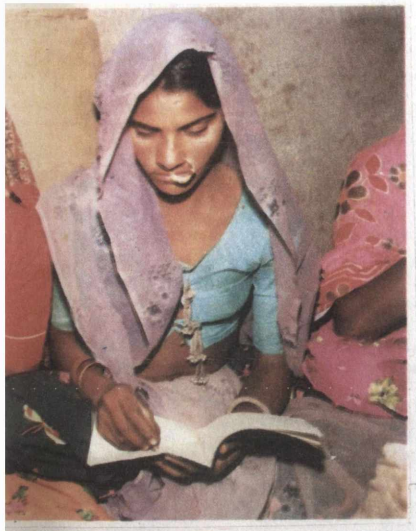

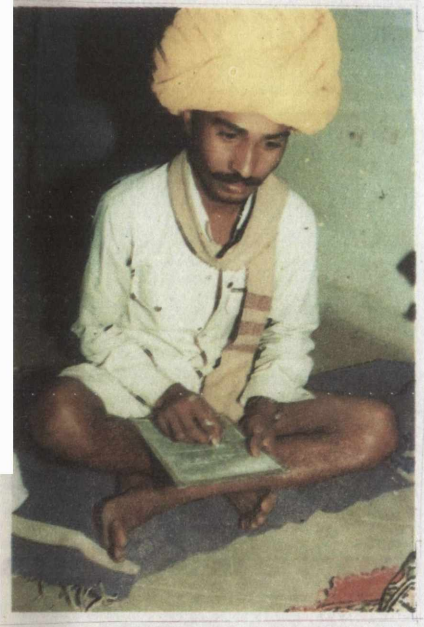

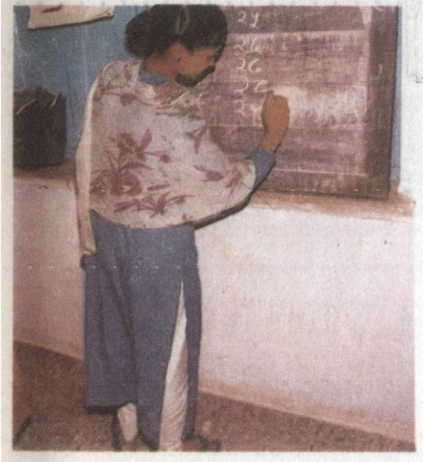

विषय सूची

बिहार 1
एक सच्ची कहानी 3
जनसाधारण में असाधारण व्यक्ति 4
प्राप्त करने योग्य लक्ष्य 4
अनुभव की जाने वाली आवश्यकता 4
स्वीकार्य अनुदेशक ! 5
कोयला खानों में साक्षरता 6
आदिवासी गांव साक्षरता की ओर 7
चाहा गांव में सामुदायिक सहयोग 8

कर्नाटक 12
लंबानी प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में शामिल 14
येलियूर में कमाई के धंधे 15
पांचेगौडनोडोड्डी के लोक नर्तक 16
चोक्काहल्ली के रेशमी धागा कातने वाले 17
किट्टूर के अगरबत्ती बनाने वाले 18
विवेकानंद गिरिजन कल्याण केंद्र 19
मुन्नोली में देवदासी केंद्र 21

राजस्थान 24
मुंडिया गांव पूर्ण साक्षरता की ओर 26
खरोली के मीना लोग 27
बारखंड़ी कलां के लोक नर्तक 28
अजमेर प्रौढ़ शिक्षा संघ 30
प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से लाभांवित विचाराधीन कैदी 31
लांबी पट्टी साक्षरता की राह पर 32
मोटा गांव पूर्ण साक्षरता के लिए चुना गया 32
विचाराधीन कैदी पढ़ कर प्रसन्न हैं 33
महिला लोक जागृति समिति 33
ऊंटों के देश में 34

उत्तर प्रदेश 37
नया गांव के झाड़ू बनाने वाले 38
नींबू वाला के धूप बनाने बाले 40
खुसालपुर में अल्प संख्यक समुदाय के लिए केंद्र 41
जौनसार की दूरवर्ती पहाड़ियां 42
गंजा गांव में चरखा केंद्र 44
युवती मंडल, रानी बाग 45
तराई गांव साक्षरता की ओर 46
बिंदु काठा की कहानी 46
विकलांग लड़की इच्छा शक्ति और हिम्मत दिखाती है 48
गाड़ी खास के माचिस की तीलियां पैक करने वाले 48
झाखरासी में बहूद्देशीय केंद्र 49
राणा बेणी माधव जन कल्याण समिति, राय बरेली 50
दुमरिया के गलीचा बुनकर 51

पश्चिम बंगाल 53
सोए हुए गांव साक्षरता के लिए जाग उठे 55
संथाल गांव साक्षरता की राह पर 56
पेड़ ही पेड़ 58
झंडारूपुर गांव के मयूर नर्तक 59
ऐथाला गांव की गायिका किशोरियां 60
बाड़ा आरा की नृत्यांगनाएं 61
सबसे प्रभावकारी तरीका क्या है? 62

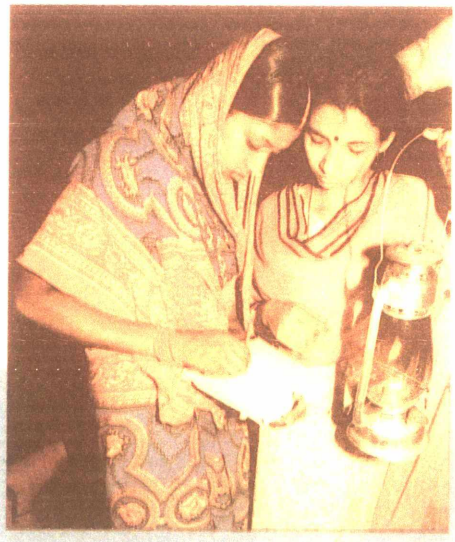

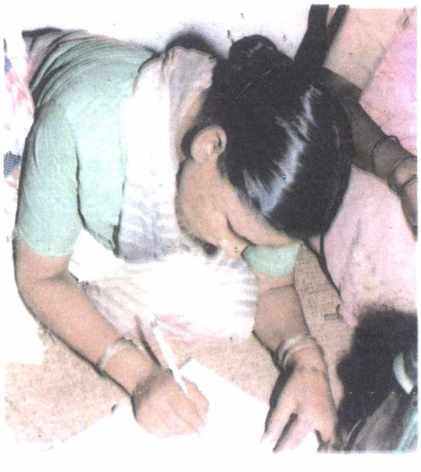

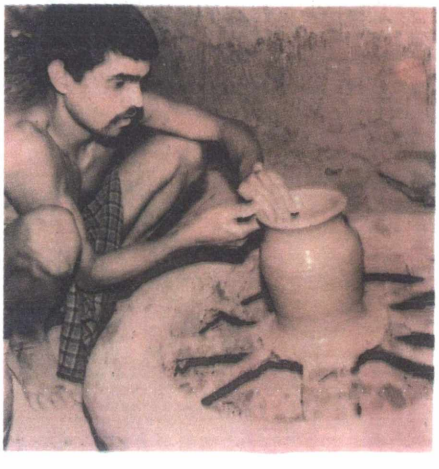

एक सच्ची कहानी

अनौपचारिक शिक्षा क्या है? यह सफल कैसे हो सकती है?

बहुतबार लोग साक्षरता कार्यक्रमों के बारे में ऐसे प्रश्न पूछते हैं। वे इन प्रश्नों के उत्तर अनेक स्रोतों से ढूंढने का प्रयास करते हैं। इन स्रोतों में प्रौढ़ शिक्षा से संबंधित साहित्य भी शामिल है। हो सकता है उन्हें कुछ संतोषजनक परिभाषाएं या स्पष्टीकरण मिल भी जाएं। किंतु यह बेहतर और अधिक विश्वसनीय होगा यदि वे प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों का संचालन स्वयं देखें और अनौपचारिक शिक्षा पद्धति की सफलता के बारे में अपने ही निष्कर्ष निकालें।

बिहार के पटना शहर में हमें ज़ाने का मौका मिला। वहां हमने हरिजन बस्ती में स्थित बहुत प्रौढ़ शिक्षा केंद्र देखे। इस क्षेत्र को शेखपुरा बिंदटोली कहते हैं।

इन केंद्रों में से एक पुरुषों का केंद्र था जिसे लाल बाबू दास, अनुदेशक चलाते थे। यह सचमुच ही आकर्षक था और "अनौपचारिक" ढांचे से मेल खाता था।

यहांहमने देखा कि शिक्षार्थी समय पर आते थे और पढ़ाई में जुट जातेथे और बहुत नियमित थे और इस बात का विचार किए बिना कि अनुदेशक समय पर आता है या नहीं। अनुदेशक कारखाने में कामकरता था और कभी कभी उसे देरी हो जाती थी और वह अपने केंद्र में समय पर नहीं पहुंच पाता था। किंतु शिक्षार्थियों से वह इतना घुलमिल गया था कि वे समय पर आते थे और जब तक वह वहां नहीं पहुंचता था वे अपनी पढ़ाई, लिखाई आदि शुरू कर देते थे।

शिक्षार्थियों के इस सहज चलन को हम क्या कहें? निःसंदेह वे प्रेरित हैं। अनुदेशक का वे बहुत मान करते हैं। केवल इतना ही नहीं उनमें अपनेपन की भावना, सहयोग की भावना या इसे जो भी कोई नामदें, पैदा हो गई है।

यह औपचारिक पद्धति से बाहर सचमुच संगठित शैक्षिक गतिविधि है जिसमें शिक्षार्थियों और शिक्षण उद्देश्यों की पहचान हो सकती है।

अनुदेशक ने अपनी निजी प्रयास से और अपने शिक्षार्थियों के सहयोग से कई तरीके विकसित किए हैं। इनमें मुख्यतया ऐसे तरीके हैं जो उन्होंने अपने शिक्षार्थियों के अनुभव का उपयोग करके बनाए हैं। इससे केंद्र को जीवंत और रोचक बनाने में मदद मिली है।

अनौपचारिक पद्धति में हम वास्तव में इसी लक्ष्य को पाना चाहते हैं किंतु हमें पूरी सफलता मिल नहीं पा रही।

लाल बाबू जैसे अनुदेशकों ने अपने प्रौढ़ शिक्षार्थियों को शिक्षित करने के लिए इस पद्धति का उपयोग कारगर ढंग से और सफलतापूर्वक किया है।

जनसाधारण में असाधारण व्यक्ति

राज्यों के अपने दौरों में हमें बहुत ही विभिन्न प्रकार के लोग मिले हैं जो पढ़ाने और सीखने सहित साक्षरता को बढ़ावा देने की गतिविधियों में लगे हुए हैं। यह ऐसा जन कार्यक्रम है जिसमें जो लोग जुटे हुए हैं या इसकी सफलता में किसी न किसी तरीके से योगदान कर रहे हैं उनके विभिन्न वर्गों का कोई अंत नहीं है।

एक बार फिर बिहार के पटना शहर में, किदवाई पुरा में हमें श्रीमती गीता डे अनुदेशिका बहुत जोरदार और ईमानदार महिला कार्यकर्ता मिलीं। उन्होंने योग से प्रौढ़ शिक्षा में कदम रखा। जी हां, वह व्यवसाय से योग शिक्षिका हैं और अपनी आजीविका उसी से कमाती हैं और अपने फालतू समय में महिला शिक्षार्थियों को साक्षरता प्रदान करके वह अपने समुदाय, पड़ोसियों और अपने इलाके के दूसरे लोगों की सेवा कर रही हैं। इस महान कार्य में उन्हें कुछ पारितोष मिलता है। उनके शिक्षार्थी उनके प्यार स्वभाव, मनोहर आचरण और व्यक्तित्व से आकर्षित हुए हैं। शिक्षार्थियों ने उनके कुछ गुणों को और सबसे बढ़कर उनके स्वभाव में आत्मविश्वास का जो सर्वोपरि गुण है उसे अनजाने में ग्रहण करने की कोशिश की है। श्रीमती डे का सामाजिक कार्य कुछ ऐसा है जो उन्हें व्यस्त रखता है और दूसरों के लिए बहुत उपयोगी है।

यह वह भावना है जो श्रीमती डे जैसी शिक्षित गृहिणियां इस कार्यक्रम में ला सकती हैं और अपने मुहल्लों या क्षेत्रों में इसके फलने फूलने में मदद कर सकती हैं।

प्राप्त करने योग्य लक्ष्य

शिक्षा का न्यूनतम स्तर क्या है?
प्रौढ़ शिक्षा केंद्र उसे बढ़ाने के लिए क्या करे?
ये कुछ बुनियादी प्रश्न प्रत्येक प्रौढ़ शिक्षा परियोजना और इसके कार्यकर्ताओं के सामने हैं।

नवादा जिले की अकबरपुर परियोजना में कोहिला गांव में हमने दो प्रौढ़ शिक्षा केंद्र देखे जो दोनों ही केवल अनुसूचित जाति के लोगों की महिलाओं के लिए हैं। सभी महिला शिक्षार्थी 15-35 आयु वर्ग की थीं।

उस दिन बरसात हो रही थी। लोगों को कई और महत्वपूर्ण काम थे, विशेषकर महिलाओं को। फिर भी वे सब प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में इकट्ठी हो गई थीं।

हमने शिक्षार्थियों से बातचीत की यह जानने के लिए कि उनकी पढ़ने में रुचि क्यों है, इससे उन्हें क्या लाभ हो सकते हैं, आदि। वे कितना न्यूनतम स्तर प्राप्त करने की अपेक्षा करती हैं?

उन्होंने बताया कि उनकी समस्याएं तो अनेक हैं किंतु उनके बावजूद वे सीखने को तरजीह देती हैं क्योंकि इससे उन्हें उनके जीवन में मदद मिलेगी।

यद्यपि वे लाभों के बारे में स्पष्ट नहीं बता पाईं, फिर भी यह स्पष्ट था कि वे न्यूनतम आवश्यक शिक्षा प्राप्त करना चाहती हैं जिससे उन्हें समाज में रहने, काम करने और भाग लेने की क्षमता मिल जाए।

प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में भागीदारी के तरीकों से शिक्षा का यह न्यूनतम स्तर या कोटि प्राप्त करना संभव होना चाहिए बशर्ते कि अनुदेशक अच्छा जानकार हो, अच्छी तरह प्रशिक्षित हो और इस काम को बड़े उत्साह और जीवंत दृष्टिकोण से करे। वास्तव में, सभी आयु वर्गों और परिस्थितियों के लोग शिक्षा के इस न्यूनतम स्तर के हकदार हैं। साक्षरता कई गुणों को बढ़ाती है जिससे व्यक्ति समाज में अपना जीवन, कामकाज और आचरण बेहतर बना सकता है।

अनुभव की जाने वाली आवश्यकता

कार्यात्मकता क्यों?
यह प्रश्न प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में प्रायः पूछा जाता है। इसके लिए क्या

किया जा रहा है? शिक्षार्थियों को यह कैसे मदद करेगी, आदि आदि।

यही प्रश्न पटना सदर प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में दीघा मैनपुरा के महिला केंद्र में उठा था। श्रीमती हीरा मनी देवी अनुदेशिका हैं। शिक्षार्थी उपयोगी कार्यात्मक कौशल सीखना चाहते हैं ताकि वे अपनी रोज़ी रोटी कमा सकें जो गुजारे के लिए उनकी सबसे बड़ी जरूरत है।

देवी उन्हें सिलाई का काम, कपड़े बनाने, कशीदा आदि सिखाती हैं। किंतु यह उनकी सभी जरूरतों का हल तो नहीं हो सकता।

शिक्षार्थी इससे कुछ अधिक चाहते हैं, कुछ ऐसा काम जहां वे सब इकट्ठे काम कर सकें, कोई उत्पादक काम जिससे उन सब को लाभ मिल सके।

परियोजना अधिकारी और जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी, पटना ने वायदा किया है कि वे कुछ कार्यात्मक कौशलों का प्रदर्शन करने की व्यवस्था करेंगे जैसे लिफाफे बनाना, अगरबत्ती, मोमबत्ती आदि ताकि औरतें उनमें से किसी एक को चुन लें जो उन सब को अच्छा लगे और जिससे वे अपना धंधा शुरू कर सकें।

प्रौढ़ शिक्षा केंद्र ने उन्हें यह समझाने में मदद की है कि जीवन में कार्यात्मकता का महत्व है और यह उनके रहन सहन को पूरी तरह बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

कार्यात्मकता के अभाव में साक्षरता का प्रयास अधिक आगे नहीं बढ़ सकता। मात्र साक्षरता तो केवल प्रारंभिक शुरू-शुरू का साधन है, किंतु यह केवल ''कार्यात्मक साधन'' के रूप में ही पनप सकता है।

वास्तव में कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रमों ने यह बात बिल्कुल दिखा दी है कि पढ़ाई अधिक शीघ्रता से समझ आती है, अधिक आनंद देती है और बेहतर बनी रहती है और प्रयोग में लाई जाती है जब कौशल और विषयवस्तु और पढ़ाने के तरीके शिक्षार्थी के वातावरण से पनपते हैं।

स्वीकार्य अनुदेशक

अनुदेशक को अपने मिशन में सफल होने के लिए कैसा होना चाहिए?

प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों को ठीक ढंग से स्थापित करने और चलाने में अनुदेशक निर्णायक भूमिका निभाता है। वह अधिकारवादी न हो बल्कि समझदार और विश्वास जगाने वाला हो। सबसे बढ़कर अनुदेशक को ऐसा होना चाहिए कि शिक्षार्थियों और लोगों को वह स्वीकार हो।

यही कारण है कि उसी समुदाय और स्थान से योग्य और वचनबद्ध लोगों को अनुदेशकों के रूप में चुनने के प्रयास किए जाते हैं। इससे कई प्रकार से प्रौढ़ शिक्षा केंद्र के लिए शिक्षार्थियों को अभिप्रेरित करने और लोगों का सहयोग पाने में मदद मिलती है।

हमने ऐसी दो स्वीकार्य अनुदेशिकाएं – सितारा बेगम और आशा खातून – हजारी बाग के लाखे इलाके में देखीं। यह मुस्लिम अल्पसंख्यकों का क्षेत्र है। वे दोनों जोश और ताजगी से भरी थीं

और शिक्षार्थी हिंदी सीखने के लिए पूरी तरह प्रभावित और अभिप्रेरित थीं। उनमें से अधिकांश अपनी मातृभाषा उर्दू में पढ़ना और लिखना जानती थीं।

उन्होंने बताया कि उर्दू की अपेक्षा हिंदी सीखना आसान है। उनकी प्रगति भी बहुत अच्छी थी। उन्होंने केवल तीन महीनों में ही हिंदी में पढ़ना, लिखना और गिनना सीख लिया था।

वे कार्यात्मक हुनर – सिलाई, कपड़े बनाना, कढ़ाई आदि भी सीखना चाहती हैं। इसके लिए परियोजना अधिकारी व्यवस्था कर रहे हैं।

कोयला खानों में साक्षरता

हजारी बाग खानों का जिला है। इसलिए अब निरक्षर मजदूरों के लाभ के लिए खानों में अधिक प्रौढ़ शिक्षा केंद्र खोलने के प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसे तीन केंद्र मॉडू परियोजना क्षेत्र में पहले ही शुरू किए जा चुके हैं।

हमने हजारीबाग-रांची सड़क पर हेसागाड कोयला - खान की महिला मजदूरों के लिए खोले गए केंद्र का दौरा किया।

मैट्रिक पास आदिवासी लड़की कुमारी पुष्पा लता टिर्की इस प्रौढ़ शिक्षा केंद्र की इंचार्ज है। इसके शिक्षार्थी भी आदिवासी समुदाय के हैं।

बड़े पैमने पर कोयला खनन इस क्षेत्र के लोगों के लिए अपने साथ कई नईसमस्याएं लाया है। प्रदूषण और काम की कठिन स्थितियां इन्हीं ग अंग हैं। खानों में मजूरी तो अच्छी मिलती है किंतु महिला अभी भी यह महसूस करती हैं कि दिन भर जितना कठिन परिश्रमवे करती हैं उसकी तुलना में उन्हें कम मजूरी मिलती है। किंतु इस क्षेत्र में रोजगार का कोई दूसरा रास्ता भी तो नहीं है।

कुमारी टेर्की और उनके शिक्षार्थियों से मिलना बहुत रुचिकर और शिक्षाप्रद था। वे अच्छी प्रगति कर रही हैं और उन्हें आशा है कि वे अपना कोर्स उपलब्धि की उच्च प्रतिशतता के साथ पूरा करेंगी।

आदिवासी गांव साक्षरता की ओर

रांची ज़िले के मंदार कस्बे के दक्षिण में कोई 22 किलोमीटर दूर एक विशिष्ट आदिवासी गांव है जिसे हरिल कहते हैं। यह अच्छी सड़कों से जुड़ा हुआ नहीं है और न ही इसमें बिजली जैसी आधुनिक सुविधाएं हैं। इनमें से अधिकांश लोग अपने जीवनयापन के लिए भूमि पर निर्भर हैं। उनमें से कई अकुशल मज़दूर, भूमिहर श्रमिक आदि हैं। उनमें से कुछ ने मिट्टी के बर्तन बनाने का अपना पुराना धंधा अपनाया हुआ है।

प्रौढ़ शिक्षा इस पिछड़े हुए क्षेत्र में पहुंच गई है और लोगों ने बड़े पैमाने पर मंदार परियोजना में साक्षरता प्राप्त करनी शुरू कर दी है। यह लेखक इस समय यहां चल रहे तीनों प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों (एक महिलाओं के लिए और दूसरे दो पुरुषों के लिए) में जाकर देखी जा सकी है।

महिलाओं के केंद्र को एक गैर मैट्रिक आदिवासी लड़की ब्यूटी कजूर चला रही है। उसने इस कार्यक्रम के लिए काफी समर्थन जुटा लिया है। उसके केंद्र पर शिक्षार्थियों की प्रगति से भी उसके अच्छे प्रयास का पता चलता है।

गांव के जीवन की एक और उल्लेखनीय बात है वहां के लोगों का

सत्कार और प्यार। उन्होंने साक्षरता की प्रक्रिया में इसे नहीं खोया है। वे अभी भी अपने अतिथियों का स्वागत पुरानी परंपरा के अनुसार करते हैं। उनके पांव पखारते हैं और हाथ धोते हैं, उन्हें माला पहनाते हैं। उसके बाद उनके मनोरंजन के लिए गीत और नृत्य का आयोजन करते हैं, आदि।

उनका कहना है कि साक्षरता आत्मविश्वास पैदा करती है। ऐसा लगता है कि इन लोगों ने तीन-चार महीने की थोड़ी सी अवधि में वह आत्मविश्वास प्राप्त कर लिया है। आगे का मार्ग आशाओं और संपन्नता से भरा हुआ है।

चाहा गांव में सामुदायिक सहयोग

सामुदायिक सहयोग क्या है? साक्षरता कार्यक्रम के लिए इसे कैसे प्राप्त किया जाए?

ये वे विषय हैं जिन पर प्रौढ़ शिक्षा कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के दौरान चर्चा की जाती है। हाल ही में प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, नई दिल्ली ने इस विषय पर एक फिल्म भी तैयार की है।

किंतु यदि कोई व्यक्ति वास्तव में सामुदायिक सहयोग देखना चाहता है तो उसे गुमला जिला मुख्यालय के बाह्यांचल में बसे चाहा आदिवासी गांव में जाना चाहिए। वहां के लोगों ने एक दूसरे की आर्थिक, सामाजिक और अन्य रूपों में सहायता करके गहरी सामुदायिक चेतना का विकास कर लिया है।

उदाहरण के लिए यदि गांव में कोई परिवार घर बनाने या टाइलों की छत बदलने आदि में असमर्थ हो तो गांव में दूसरे परिवार उसकी मदद के लिए जाते हैं। वे सब इकट्ठे होकर अपने सुविधाजनक समय में "श्रमदान" करते हैं और काम पूरा कर देते हैं।

गांव के मध्य में एक चर्च है। यह उनकी चर्चाओं और गतिविधियों का केंद्र है।

उनमें आई इस चेतना ने सबकी भलाई के लिए प्रयोजन और कार्रवाई की एकता जमाने में मदद की है। प्रत्येक परिवार यह महसूस करता है कि वह अकेला नहीं है किंतु उसके पीछे सारा समुदाय है। इससे उनका बल और विश्वास बढ़ता है।

सामुदायिक चेतना को सांप्रदायिक भावना समझने की भूल न की जाए। सांप्रदायिक भावना विनाशकारी है और इन लोगों के मन में बिल्कुल नहीं है।

इस पृष्ठभूमि में इस गांव में साक्षरता वृद्धि को अनुकूल वातावरण मिल गया है और थोड़े ही समय में इसने अपनी जड़ें जमा ली हैं। लोगों में इसके प्रति उत्साह है। इस समय इस गांव में छह प्रौढ़ शिक्षा केंद्र चल रहे हैं—एक तो केवल महिलाओं के लिए है और दूसरे सभी मिले जुले केंद्र हैं पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए।

जनसंख्या	: 756
पुरुष	: 428
महिलाएं	: 337
15-35आयुवर्ग में कुल प्रौढ़ निरक्षर	: 358
पुरुष	: 105
महिलाएं	: 253

वर्ष	प्रौ.शि.नि. की संख्या	नाम दर्ज	साक्षर बनाए गए
1987-88	4	120	57
1988-89	6	180	जारी है

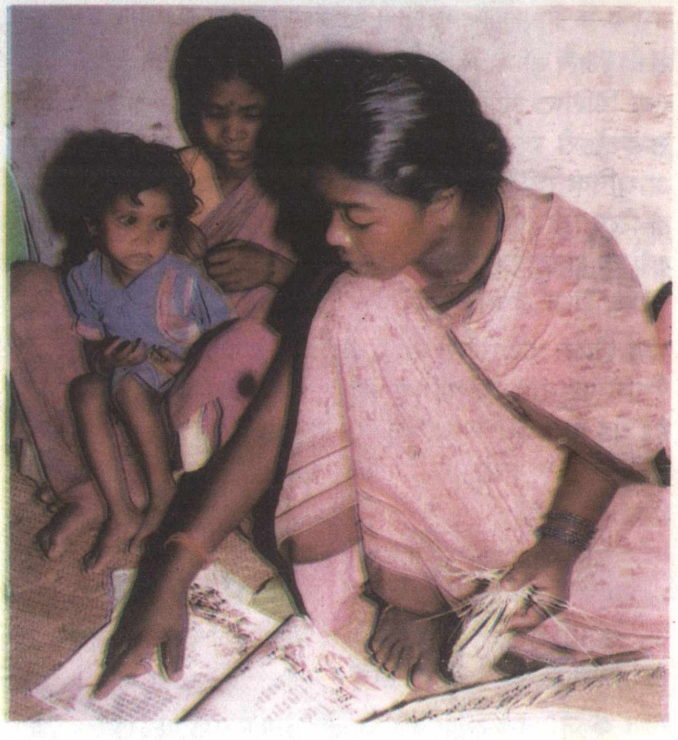

यहां बिजली या दूसरी आधुनिक सुविधाएं नहीं हैं। यहां के लोग अपनी आजीविका के लिए भूमि और ग्राम/कुटीर उद्योगों पर निर्भर हैं जैसे मिट्टी के बर्तन बनाना, लोहारगिरी करना, दोने बनाना, चटाई बनाना, आदि।

हमारे निरीक्षण के दिन एक केंद्र में शिव प्रसाद साहू, अनुदेशक उन्हें शराब की बुराइयों के बारे में बता रहे थे। वह पुरुष शिक्षार्थियों से पूछ रहे थे कि शराब पीना हानिकारक क्यों है, इसके कारण बताएं। महिलाओं ने भी इस चर्चा में भाग लिया और बताया कि इससे परिवार की आय और स्वास्थ्य पर कैसे प्रभाव पड़ता है, आदि। इस आदिवासी समुदाय में शराब पीना अभी भी समस्या है, हलांकि इसके विरुद्ध धीरे धीरे जागृति आ रही है।

गांववासी अब बिजली की मांग कर रहे हैं और पूछ रहे हैं कि उन्हें इस सुविधा से वंचित क्यों रखा जा रहा है, आदि किंतु अभी तक उन्होंने निरक्षरता के कारण कोई संगठित प्रयास नहीं किया है। हो सकता है अब वे इकट्ठे हो जाएंगे और अपने गांव में बिजली लाने का मिलकर नया प्रयास करेंगे। उससे साक्षरता को बढ़ावा देने में बहुत मदद मिलेगी।

इस परियोजना का विचार है कि इस गांव को अगले वर्ष तक पूरी तरह साक्षर बना दिया जाए। इसके लिए यह जितने अधिक से अधिक केंद्र खोलने संभव होंगे खोलेगी ताकि बाकी बचे सबके सब प्रौढ़ शिक्षार्थियों को साक्षर बनाया जा सके।

गुमला तकनोलाजी प्रदर्शन जिला है। इसलिए यहां प्रकाश की सुविधाओं को सुधारने के लिए सौर पैक सप्लाई किए जा सकते हैं।

प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में उपस्थिति अच्छी मानी जा सकती है यद्यपि इस काम को शुरू हुए चार महीने बीत जाने पर भी प्रगति इतनी अच्छी नहीं है। इसका कारण यह है कि वास्तव में निरक्षरों को अभी भी पूरी तरह समझाया जाना है कि वे कक्षाओं में नियमित रूप से

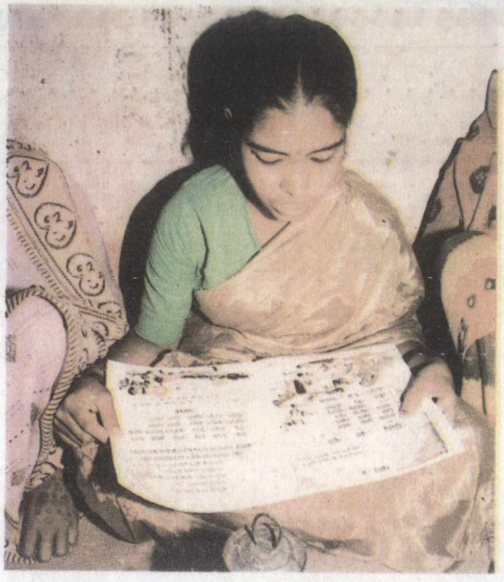

आया करें।

इसलिए साक्षरता के प्रति उनमें जागृति बढ़ाने और उसकी जरूरत समझाने के लिए सामाजिक समारोह और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इन समारोहों में सारा गांव, पुरुष और महिलाएं और बच्चे भाग लेते हैं। वे इनमें गाते हैं और नाचते हैं और आनंदविभोर हो जाते हैं। उन्हें इसमें हर्ष और पारितोष मिलता है।

परियोजना अधिकारी, कुमारी टिर्की और परियोजना कर्मचारियों ने इस गांव के लोगों से गहरा सपर्क स्थापित कर लिया है। वास्तव में वे उनसे इतना घुलमिल गए हैं कि वे उनके साथ गा और नाच भी सकते हैं और उनके दुःख सुख में भाग भी लेते हैं। यह लाभकारी सिद्ध हो सकता है और इससे साक्षरता की तेजी से वृद्धि में मदद भी मिल सकती है।

साक्षरता के फलस्वरूप गांववासियों में सामुदायिक चेतना की अभिव्यक्ति बेहतर हो सकती है और इससे सबका हित कहीं बेहतर हो सकता है।

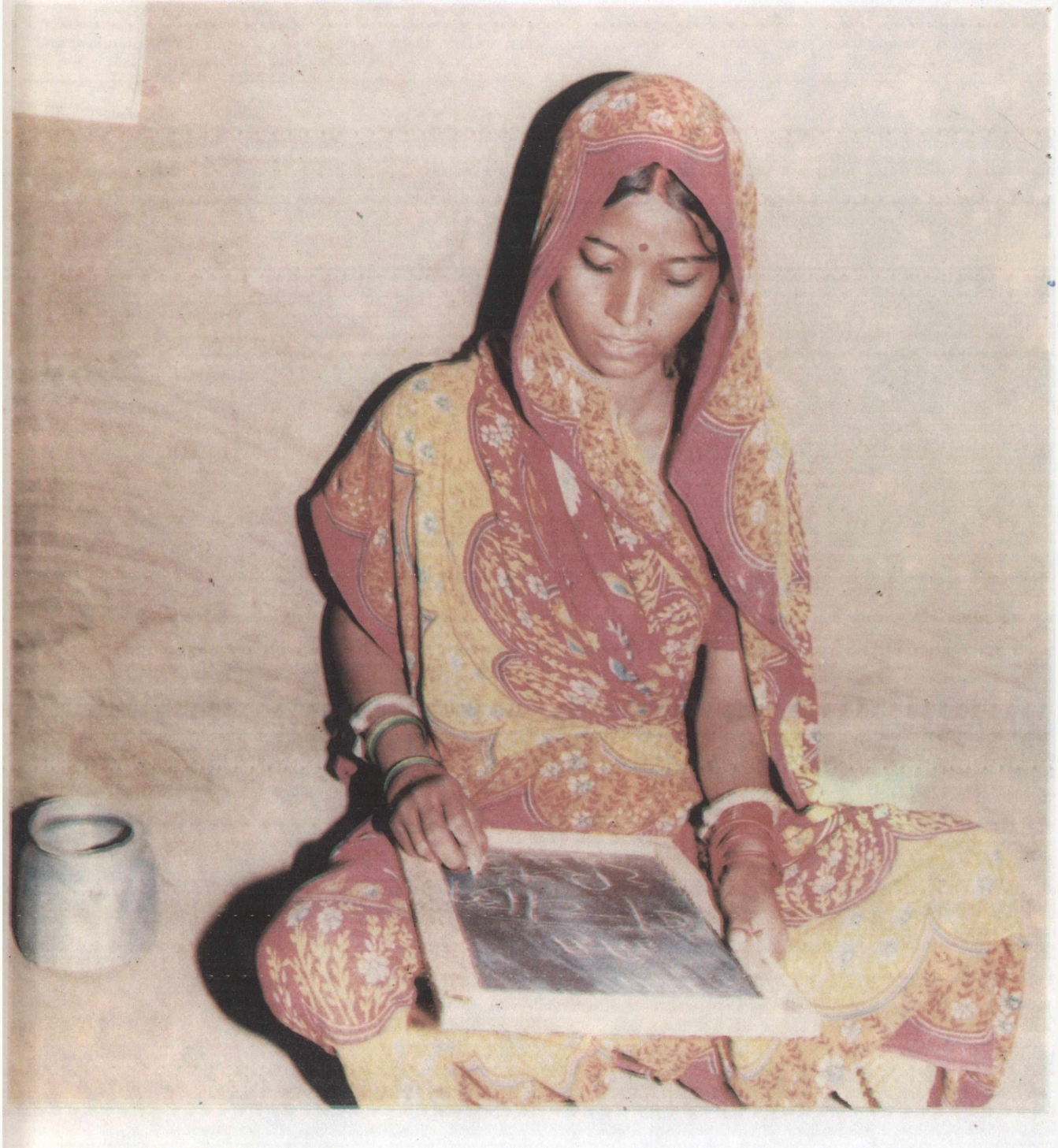

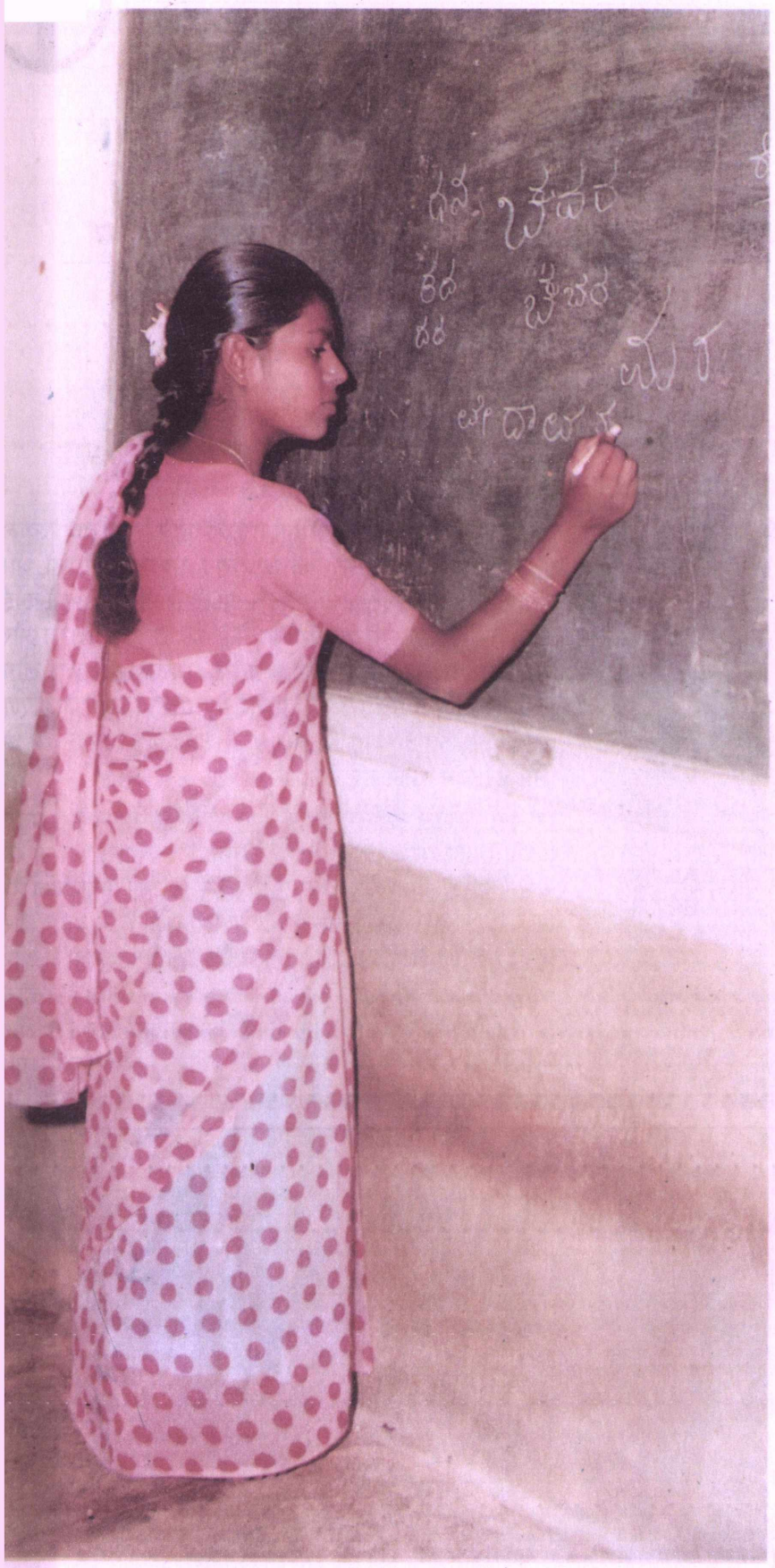

लंबानी प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में शामिल

लंबानी आज कर्नाटक में खुशहाल लोग हैं। वह अनुसूचित जाति के लोग हैं किंतु बहुत हृष्ट पुष्ट और अच्छे रूप वाले हैं। उनकी महिलाएं रमणीय और सुंदर हैं।

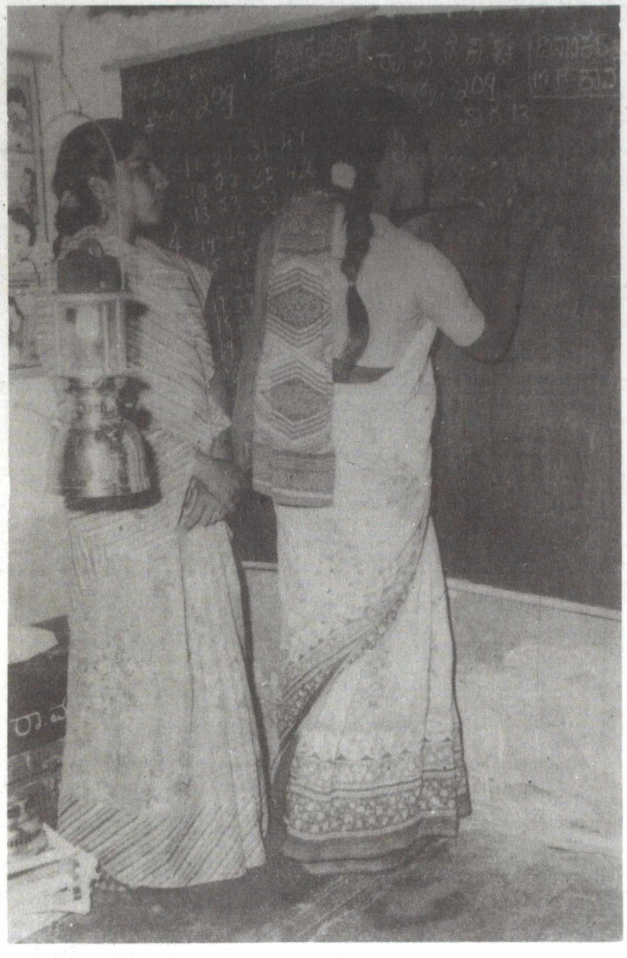

यह सच है कि सदियों से इस समुदाय की पहुंच शिक्षा तक बिल्कुल नहीं थी। उनकी साक्षरता की आवश्यक पृष्ठभूमि भी नहीं थी। लंबानी बोली केवल बोलचाल की भाषा ही है। इसकी अपनी कोई लिपि नहीं है। फिर भी यह संगीतमयी है और उनके लोकगीत और नृत्य उन्हें वस्तुतः आदिवासी बनाते हैं। उनके अधिकांश लोग भूमिहीन श्रमिक हैं। इस वर्ष अच्छी बरसात हो जाने के कारण उनके लिए काफी काम है। चार प्रौढ़ शिक्षा केंद्र उनके लाभ के लिए इस वर्ष खोले गए हैं।

एम.एच. कवालू महिला केंद्र में शिक्षार्थी नियमित रूप से पढ़ने आती हैं और पढ़कर खुश हैं। मंजूलम्मा, जिसने एस एल एल सी पास किया है और जो इसी समुदाय की हैं इनकी अनुदेशिका हैं। वह प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों को पिछले चार वर्षों से चलाती आ रही हैं और उन्होंने शिक्षार्थियों को प्रेरित करने और उनकी जरूरतों की ओर ध्यान देने का काफी ज्ञान और अनुभव प्राप्त कर लिया है। उन्होंने वास्तव में केंद्र में जान फूंक दी है। शिक्षार्थियों को गाते और नाचते, वर्णमाला और गिनती सीखते देखकर बहुत अच्छा लगा। इनमें से किसी भी शिक्षार्थी ने बंगलौर कभी नहीं देखा है; जो राज्य की राजधानी है और उनके गांव से 100 किलोमीटर से भी कम दूरी पर है।

ऐसा है उनका सादा जीवन। किंतु उनकी सीखने की उच्च आकांक्षाएं हैं। वे चटाइयां बुनकर और कमाई के दूसरे धंधों के जरिए अधिक कमाने की भी बहुत आकांक्षा रखते हैं।

मंजूलम्मा को हमारी हार्दिक प्रशंसा और शुभकामनाएं।

येलियुर में कमाई के धंधे

येल्यिुर एक छोटा सा गांव है। यह मांड्या कस्बे से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर है। इस गांव में इस समय दो प्रौढ़ शिक्षा केंद्र काम कर रहे हैं–एक पुरुषों के लिए है और दूसरा महिलाओं के लिए। लगभग सभी शिक्षार्थी कृषि मजदूर हैं जो छह से लेकर सात रुपए तक प्रतिदिन कमा लेते हैं। उनके पास अपनी आय बढ़ाने का और कोई साधन नहीं है।

ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम, मांड्या ने स्थानीय मंडल पंचयत की सक्रिय सहायता से प्रौढ़ शिक्षार्थियों के लिए कमाई के धंधे शुरू कर दिए हैं। उसने लोगों को इन धंधों का प्रशिक्षण देने के लिए अपेक्षित कच्चे माल की भी व्यवस्था कर ली है।

उदहरण के लिए आज महिलाएं लिफाफे, साबुन और डिटर्जेंट पाल्डर बनाना सीख रही हैं। सरकारी कार्यालयों में प्रयोग के लिए औ विभागीय और अन्य स्टोरों में लिफाफों की बहुत मांग है। यह धंध धीरे धीरे बढ़ रहा है। प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में जो साबुन और डिर्जेंट पाउडर बनाया जाता है उसे अधिकतर गांव वाले अपने ही प्रयोग में लाते हैं। मंडल पंचायत क्षेत्र के दुकानदारों से कहेगी कि वे इन चीजों को मार्किट में बढ़ावा दें।

श्रीमती पुट्ट चिन्नम्मा अनुदेशिका हैं और वह स्थानीय स्कूल के भवन में यह केंद्र चला रही हैं। उन्होंने अपने ही फ्लैश कार्ड और दूसरी पाठन सामग्री विकसित की है। वह शिक्षार्थियों की अक्षरों को पहचानने, उन्हें जोड़ने और शब्द बनाने आदि में मदद करती हैं।

एक और रोचक धंधा चाक बनाने का है जिसमें पुरुष शिक्षार्थियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। चाकों की मांग स्कूलों से आ रही है और ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों के लिए भी इनकी जरूरत है। वे रंगीन चाकें भी बना रहे हैं जो गांवों में रंगोली के काम में प्रयोग की जाती है।

वाई. एम. पुट्टास्वामी, जो एस एस एल सी पास हैं, उनके अनुदेशक हैं। वह इस केंद्र की गतिविधियों में बहुत ही रूचि लेते हैं।

पांचेगौडनाडोड्डी के लोक नर्तक

पांचेगौडनाडोड्डी गांव मांड्या कस्बे के बाहरी क्षेत्र में है। इस गांव के लोग संस्कृति और परंपरा के महान उत्तराधिकारी हैं। प्रौढ़ शिक्षार्थी, जो सभी पुरुष हैं, इसके अपवाद नहीं हैं। वे "कोल्लट्टम" की ताल पर मिलजुल कर गीत गाना, नाचना पसंद करते हैं और ऐसे ही दूसरे लोक संगीत और नृत्य करना चाहते हैं।

हमारे दौरे के समय जो कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया उसमें अपने लोगों की कला देखने के लिए सारा गांव ही इकट्ठा हो गया था। "कोल्लट्टम" बहुत पेचीदा आइटम है। इसमें प्रत्येक सदस्य की चाल और लय दूसरों से बिल्कुल मिलनी चाहिए और प्रत्येक को अपनी भूमिका निभानी होती है जैसा कि टीम में होता है। इसमें डंडे लय के साथ बजाए जाते हैं और बहुत मनोहर ध्वनि प्रस्तुत करते हैं। इसके साथ साथ समूह के नेता और दूसरे लोग भी संगीत में भाग लेते हैं। इस लोक नृत्य को करने के विभिन्न तरीके हैं। यह खड़े होकर, बैठकर, तेज गति से चलकर, लेट कर,, दो दो व्यक्तियों द्वारा और तीन तीन व्यक्तियों द्वारा, इत्यादि तरीकों से किया जा सकता है।

"कुर्वा कुर्वांची" उपाख्यान का परंपरागत ढंग से जो मंचान किया गया उसमें अदभुत आकर्षण था और शायद ही कोई ऐसा गांववासी होगा जो इसके प्रभाव से अछूता रह गया हो।

ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम, मांड्या ने इन लोक कलाओं और नृत्यों को पुनर्जीवित करने और प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में लोगों का सहयोग प्राप्त करने के लिए उनका प्रमुख माध्यम के रूप में प्रयोग करने की कोशिश की है। उसने साक्षरता का संदेश फैलाने के लिए अधिकाधिक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने की योजनाएं बनाई हैं।

चोक्वाहल्ली के रेशमी धागा कातने वाले

चोक्काहल्ली एक गांव है जो चिंतामणि तालुक मुख्यालय से लगभग आठ किलोमीटर दूर है। इस गांव में लोग रेशमी धागा कात कर और हथकरघे की प्रक्रिया से रेशमी साड़ियां बुन कर गुजारा करते हैं।

इस गांवमें महिलाओं के लिए एक प्रौढ़ शिक्षा केंद्र है। यह केंद्र स्थानीय स्कूल में चलाया जा रहा है। महिला शिक्षार्थी कक्षाओं में आने में बहुत उत्सुक और नियमित हैं।

इनकी अनुदेशिका सुब्बाम्मल हैं जिन्होंने एस एस एल सी पास किया है।वह अपने शिक्षार्थियों को साक्षरता और दूसरे कौशल प्रदान करने में बहुत रूचि लेती आ रही हैं। चार महीनों में ही अधिकांश शिक्षार्थियों को कुछ बुनियादी गणित के अलावा अपने नाम लिखने, अपने पाठ पढ़ने और लिखने भी आ गए हैं। सुब्बाम्मल उन्हें उनके जीवन की दशा समझाने और उनके जीवन अधिक सार्थक और अच्छे कैसे बन सकते हैं यह बात समझाने की

बहुत कोशिश कर रही हैं।

शिक्षार्थियों से बातचीत करके और उनके जीवन की आकांक्षाएं जानकर बहुत अच्छा लगा। उनमें से कई तो पूरे जीवन भर गांव से बाहर नहीं गई हैं। वे तो जिंदा रहने और अपना गुजारा करने के लिए ही संघर्ष करती आ रही हैं। वे सब साड़ियों के लिए बारीक रेशमी धागा कातने में लगी हैं। ये साड़ियां अमीर और संपन्न लोग पहनेंगे। शिक्षार्थियों को उनके काम के लिए कम दिहाड़ी मिलती है और वे शोषित होती रहती हैं।

उनके लिए काम के दूसरे साधन ढूंढने होंगे ताकि वे अधिक कमा सकें। परियोजना अधिकारियों और मंडल पंचायत को प्रौढ़ शिक्षार्थियों को कमाई के धंधों का प्रशिक्षण देने के लिए अभी बहुत अधिक काम करना है।

किट्टूर के अगरबत्ती बनाने वाले

बेलगांव में किट्टूर गांव रानी चन्नम्मा के लिए प्रसिद्ध है। इस रानी ने अंग्रेजों से युद्ध किया था क्योंकि वे कुछ तुच्छ कारणों से उनका राज्य हड़पना चाहते थे। रानी ने बहादुरी से लड़ते हुए अपना जीवन बलिदान कर दिया। उन्हें आज झांसी की रानी और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के साथ याद किया जाता है।

किट्टूर गांव में महिलाओं के लिए अनुसूचित जाति का केंद्र है जिसे सुयोग्य महिला श्रीमती एस. एस. पियातिनति चलाती हैं। शिक्षार्थी कमाई के धंधों में भी लगे हुए हैं जैसे अगरबत्ती, टोकरी, चाक, साबुन, आदि बनाना।

उन्हें आशा है कि वे अगरबत्ती या टोकरियां बनाने के ठेके लेकर अपनी आय बढ़ा लेंगी। वे आपस में भी बातचीत कर रही हैं कि क्यों न एक सहकारी संस्था बना ली जाए और मिलजुला कर काम किया जाए। ये महिलाएं लक्ष्य बोध प्रदर्शित करती हैं और निरक्षरता तथा दहेज आदि जैसी सामाजिक बुराइयों की लड़ाई जीतने के लिए दृढ़ संकल्प हैं।

उन्होंने समझ लिया है कि यदि वे आत्मनिर्भर हो जाएं तो उनका जीवन आज की अपेक्षा कहीं बेहतर हो सकता है। यह वह बोध है जो उन्हें अपनी लालसाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने में सहायक होगा।

विवेकानंद गिरिजन कल्याण केंद्र, बी. आर. हिल्स

"यदि हम अपने लोगों की कुछ सेवा करना चाहते हैं तो हमें बस इतना ही करना है कि उन्हें शिक्षा दें, उनमें जो विशिष्टताएं हैं उनका अधिक से अधिक विकास करें। उन्हें विचार देने हैं, उनके चारों ओर की दुनिया में जो कुछ हो रहा है उसके बारे में उनकी आंखें खेलनी हैं और फिर वे अपनी मुक्ति का मार्ग स्वयं ढूंढ लेंगे।"

–स्वामी विवेकानंद

यही वह काम है जो विवेकानंद आदिवासी कल्याण केंद्र, एक स्वयंसेवी संस्था, बी. आर. हिल्स के सोलिगाओं के लिए करती आ रही है। ग्र. एच. सुदर्शन के योग्य नेतृत्व में युवकों और समर्पित सामाजिक कार्यकर्ताओं का एक दल इस क्षेत्र में आदिवासियों के संपूर्ण विकास के काम में जी जान से लगा हुआ है। इसे सक्रिय कार्यकर्ताओं का समूह कहना बेहतर है क्योंकि वे बातों की बजाय काम में अधिक विश्वास रखते हैं।

उनके दो उद्देश्य रहे हैं, एक तो आदिवासियों की समाजार्थिक दशाओं को सुधारना और दूसरे उनकी संस्कृति और मूल्यों को समृद्ध बनने में उनकी मदद करना। उन्होंने इन दोनों दिशाओं में सराहनीय प्रगति की है।

यह संस्था यह सुनिश्चित करने को सबसे अधिक महत्व देती आ रही है कि उन्होंने जो भी विकास के कार्य शुरू किए हैं उन सबमें आदिवासी लोग सक्रिय रूप से भाग लें। इन कार्यों में चिकित्सा सुविधाएं, सामाजिक वानिकी, भवन निर्माण और ऐसे ही कई दूसरे कार्य शामिल हैं जो स्वावलंबन के प्रति जागरूकता पैदा करने और साथ ही साथ आधुनिक प्रगति और सोलिगाओं की सांस्कृतिक पहचान अक्षुण रखने के बीच नाजुक संतुलन बनाए रखने में मदद कर सकते हैं।

आदिवासी लोगों में यह पता लगाने के लिए गहन जांच कार्यक्रम चलाया जा रहा है कि "सिकल सैन अनीमिया" नामक रोग उनमें से किस किस को है। यह रोग जन्मजात है और उनमें फैला हुआ है। जिन लोगों में इस रोग के लक्षण देखे जाते हैं उनका इलाज ठीक तरह किया जाता है। इन पहाड़ियों में 20,000 आदिवासी लोगों के लिए एक पूर्ण विकसित अस्पताल खोला गया है जिसमें एक्स-रे और दूसरी सुविधाएं उपलब्ध हैं। कुष्ठ रोग, क्षयरोग और मलेरिया के इलाज के अलावा जड़ी बूटियों द्वारा चिकित्सा को बढ़ावा देना सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रम का अंग है। गर्भवती महिलाओं, दूध पिलाने वाली माताओं और बच्चों के लाभ के लिए एक पोषण कार्यक्रम भी है।

आदिवासियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले गए हैं। दूरदराज के गांवों से आने वाले आदिवासी लड़कों और लड़कियों के लिए एक आवासीय स्कूल है। प्रौढ़ शिक्षा संपूर्ण शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग है। बी. आर. हिल्स में दो प्रौढ़ शिक्षा केंद्र खोले गए हैं–एक बांगला पोडू में और दूसरा वासा पोडू में। इन केंद्रों में के. महादेव और सन्नामद दोनों अनुदेशक एस. एस. एल. सी. पास हैं और सोलिगाओं के आदिवासी समुदाय के हैं। वे अपने लोगों को संगठित करने और उन्हें साक्षरता तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण देने में बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। ये युवक बहुत ही निरभिमानी हैं और मानव स्नेह तथा बुद्धिमत्ता से भरपूर हैं। ये अपने समय के महान कार्य में पूरा पूरा भाग ले रहे हैं। यदि कोई चाहे तो यूं कह सकता है कि ये युवक आधुनिक आदिवासी पुनः स्थापन या जागरण का प्रतिनिधित्व करते हैं। अपनी नई दृष्टि के कारण उन्होंने संजोए गए आदर्शों से ढोंग निकाल दिया है और सारे प्रयास में नई शक्ति भर दी है।

पहाड़ियों और जंगलों में रोज़गार के अवसरों की कमी होने के कारण आदिवासी लोगों को स्थानीय संसाधनों पर आधारित कुटीर उद्योग में प्रशिक्षण देना बहुत महत्वपूर्ण है। इस बात को समझते हुए इस केंद्र ने अगरबत्ती बनाने, बेंत और बांस की दस्तकारी, चटाई बुनने, शहद की मक्खियां पालने, नारियल की रस्सी बनाने, कपड़ा बुनने, बढ़ईगिरी, लोहारगिरी और इसी प्रकार के दूसरे प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू कर दिए हैं।

नैतिक व्यवस्था, विशेषकर आदिवासियों के लिए, एक जीवंत चीज़ है। चूंकि यह तेज़ी से बदलती जा रही है, इसलिए सोलिगाओं की युवा पीढ़ी आज निर्णायक लड़ाई लड़ रही है ताकि वे इस प्रक्रिया में अपनी पहचान खोए बिना आज की जरूरतों और जीवन के अनुरूप नैतिक व्यवस्था पुनः स्थापित कर सकें।

जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने एक बार ठीक ही कहा था कि लोगों की शिक्षा ही एक टिकाऊ चीज है जिससे वे अपनी समस्याएं हल कर सकेंगे और जब तक ऐसा नहीं हो जाता तब तक दूसरे सभी आदर्श सुधार के आदर्श ही बने रहेंगे। नया घटनाक्रम लोगों द्वारा लोगों का उद्धार है। इस संदर्भ में किसी भी विकासशील देश के लिए प्रौढ़ शिक्षा निर्णायक है।

इसलिए विवेकानंद गिरिजन कल्याण केंद्र की सक्रिय सहायता से सोलिगाओं की युवा पीढ़ी बी. आर. हिल्स में अब जो प्रयास कर रही है उसे भरपूर प्रोत्साहन और प्रशंसा मिलनी चाहिए।

हमें पूरा विश्वास है कि आदिवासी विकास के लिए किए जा रहे इन प्रयासों से सोलिगाओं के इतिहास में नया युग शीघ्र ही आ जाएगा जो संपन्नता, प्रचुरता और सांस्कृतिक पहचान का युग होगा।

मुनोली में देवदासी केंद्र

कर्नाटक में सवदत्ती दो चीजों के लिए प्रसिद्ध है–एक तो मालप्रभा बांध परियोजना और दूसरी रेणुका–येल्लम्मा मंदिर।

इन क्षेत्रों में छोटी छोटी लड़कियों को उनके बचपन में ही देवी येल्लम्मा को समर्पित कर देने और जब वे तरुण हो जाएं तो उनसे वेश्यावृत्ति करवाने की प्रथा कई सदियों से चली आ रही है। हालांकि देवदासी प्रथा को अब राज्य सरकार ने अवैध घोषित कर दिया है किंतु फिर भी यह निर्बाध रूप से अभी भी जारी है। इस प्रथा के कई कारण हैं। इनमें महिलाओं में साक्षरता की कमी, सामाजिक पिछड़ापन, देवी के बारे में अंधविश्वास का जमा रहना, सामंत वर्ग और पुजारियों में कपट संधि आदि शामिल हैं। समर्पित की गई लड़कियों में से बहुत सी लड़कियां हरिजन समुदायों की होती हैं जो गरीबी की रेखा से नीचे रहती हैं।

अंधविश्वास क्या है? "अंधविश्वास" का शब्दकोश में जो अर्थ दिया गया है वह है "अज्ञानता पर आधारित विश्वास" "झूठा धर्म", जादू टोनों और "शकुनों में विश्वास"। यह हानिकर लगता है किंतु इसमें बुराई करने की घोर क्षमता है। देखिए इसने निर्दोष लोगों के जीवन कैसे नष्ट कर दिए हैं।

इसकी कहानी कुछ इस प्रकार है। रेणुका जमदाग्नि ऋषि की पत्नी थी। उसके चार बेटे थे जिनमें प्रसिद्ध परशुराम भी शामिल था। एक बार उनके मन में लंपटता का विचार आ जाने की बात कही जाती है जिसके लिए उसे बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ी। ऋषि के आदेश से परशुराम ने उसका सिर काट दिया। उसके बाद ऋषि ने परशुराम की प्रार्थना पर अपनी पत्नी को जीवित कर दिया किंतु उस पर हरिजन "येल्लम्मा" का सिर लगा दिया।

तब से हरिजनों और दूसरे लोगों ने उसे "देवी" के रूप में मानना शुरू कर दिया और सवदत्ती में एक मंदिर है जिसे रेणुका येल्लम्मा मंदिर कहा है। यह शुरू से ही अंधविश्वास से जुड़ा हुआ है। किंतु इस अंधविश्वास को निहित स्वार्थों ने स्थायी कर दिया। इन लोगों को इससे मुक्त करने के सभी प्रयास विफल रहे क्योंकि इन लोगों की दशा में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ है वे आर्थिक दृष्टि से अभी भी दूसरों पर निर्भर हैं।

हो सकता है कि जहां दूसरे विफल हो गए हैं वहां प्रौढ़ शिक्षा सफल हो जाए। इसीलिए अब देवदासियों को सेवदत्ती में और दूसरे स्थानों में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत लाने के प्रयास किए जा रहे हैं। मुनोली का केंद्र केवल उन्हीं के लिए है। इस केंद्र में विभिन्न गांवों से 30 शिक्षार्थी आ रही हैं। साक्षरता प्रयास को ग्रामीण युवकों के स्वरोजगार प्रशिक्षण की सिलाई योजना के साथ जोड़ने के प्रयास किए गए हैं। उनके अनुदेशक एस. सी. अंगदी हैं।

देवदासियों की समस्या केवल आर्थिक नहीं है बल्कि मनोवैज्ञानिक भी है। केवल शिक्षा और बेहतर अवसर ही उन्हें अपनी असंख्य कठिनाइयों पर काबू पाने में मदद कर सकते हैं।

स्वरोज़गार कार्यक्रम में ग्रामीण युवकों के प्रशिक्षण की योजना के अंतर्गत उनमें से प्रत्येक को एक वर्ष की अवधि के लिए 200 रुपए प्रति मास छात्रवृत्ति के रूप में दिए जाते हैं। उन्हें सरकारी बसों पर निःशुल्क यात्रा करने के लिए पास भी दिए जाते हैं ताकि वे अपने गांवों से केंद्र तक आ जा सकें जो सुबह 9.00 बजे से शाम 5.00 बजे तक खुलता है।

सिलाई में प्रशिक्षण के बाद प्रत्येक को सिलाई मशीन के साथ साथ दूसरा साज सामान भी दे दिया जाएगा ताकि वे गांववालों के कपड़े सी कर अपने गांव में रोज़ी रोटी कमा सकें। यदि उन्हें वेश्यावृत्ति से मुक्ति दिलानी है तो उनके लाभकर रोज़गार के लिए दूसरे मार्ग भी ढूंढने होंगे।

हमने मुनोली केंद्र में इनमें से कई शिक्षार्थियों से बातचीत की। उनमें से कइयों के बच्चे हैं किंतु कमाई का कोई साधन नहीं है। उन्होंने यह पूरी तरह समझ लिया है कि यह सब अंधविश्वास ही था जिसने उनके जीवन बरबाद कर दिए। बेशक वे अभी भी रेणुका येल्लम्मा की स्तुति में गाती हैं। वे सब खुश हैं कि प्रौढ़ शिक्षा के साथ साथ सिलाई ने उनके पुनरुद्धार में बहुत ही मदद की है। उन्हें जो नया विश्वास मिला है वह उन्हें भविष्य में जीवन में बहुत मदद करेगा।

कल्लापुर की फारिका का कोई पति नहीं है और उसका कोई बच्चा भी नहीं है। वास्तव में उसका कोई भी नहीं जिसे वह अपना कह सके। किंतु उसने अब प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में बहुत सी सहेलियां बना ली हैं और उसे आशा है कि वह भविष्य में उपयोगी जीवन बिताएगी।

हाल ही में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार आज देवदासियां देश में कुल वेश्याओं का लगभग 15 प्रतिशत हैं और कर्नाटक तथा महाराष्ट्र के सीमावर्ती जिलों में तो ये कुल वेश्याओं का 70 से 80 प्रतिशत तक हैं। इसलिए सभी देवदासियां दर्जी नहीं बन सकतीं। सरकार और स्वयंसेवी संस्थाओं को उनकी मदद के लिए और भी बहुत कुछ करना होगा।

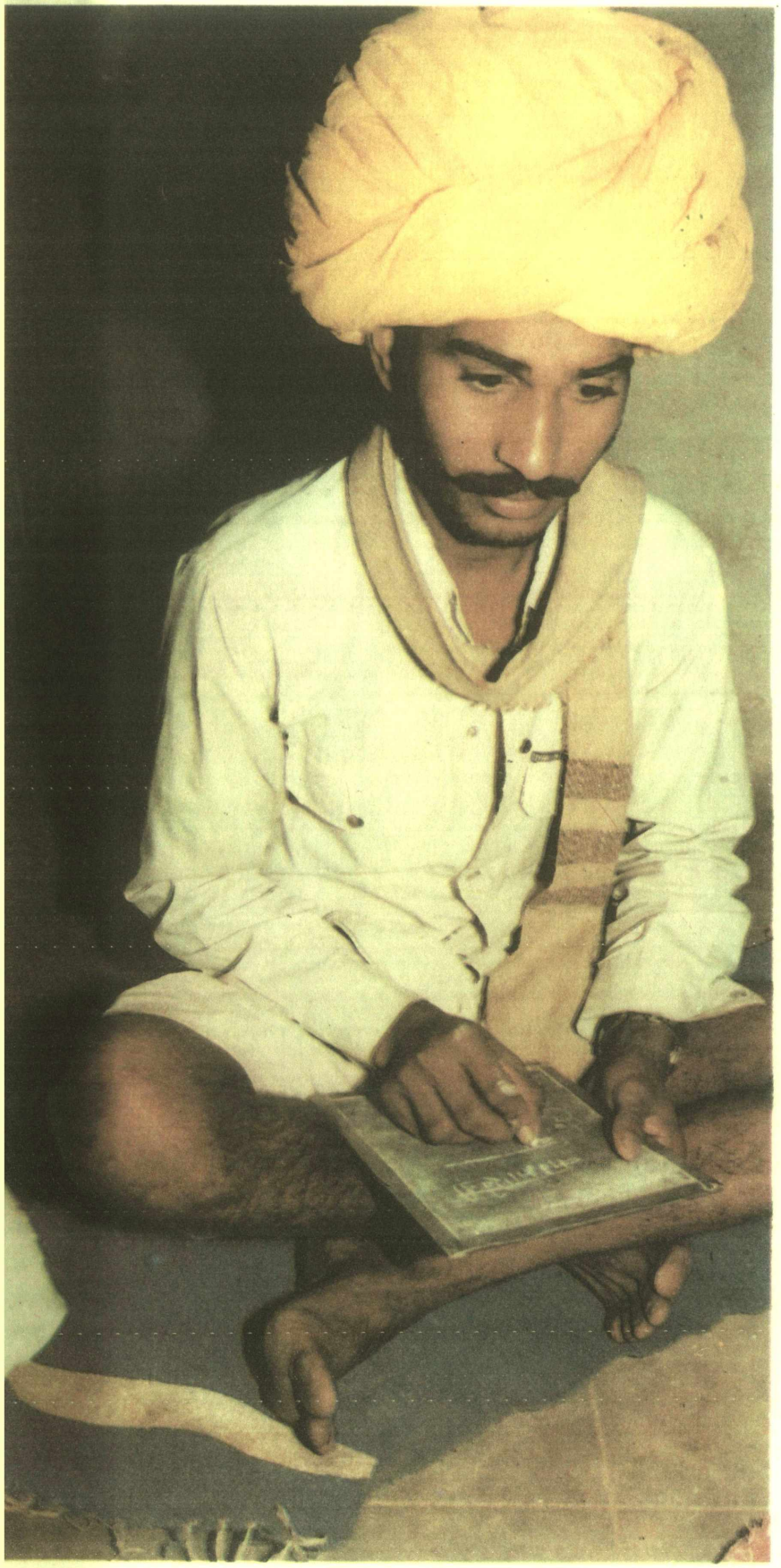

मुंडिया गांव पूर्ण साक्षरता की ओर

मुंडिया गांव आज समृद्धि की ओर बढ़ता हुआ मीना आदिवासी गांव है। इसका श्रेय राज्य सरकार द्वारा "संपूर्ण साक्षरता कार्यक्रम" के अंतर्गत शुरू किए गए साक्षरता अभियान को जाता है। इसकी जनसंख्या 5000 से भी अधिक है और इन लोगों के लाभ के लिए यहां जन शिक्षण निलयम भी हाल ही में खोला गया है। यह निलयम इस समय मुख्य सड़क के किनारे एक कमरे में है किंतु कुछ ही समय में इसे काफी जगह वाले "पंचायत घर" में ले जाया जाएगा। यह पंचायत घर निर्माण के अंतिम चरण में है। यहां प्रेरक हनुमान सहाय गौतम, इसी गांव के हैं। यह जन शिक्षण निलयम के अलावा उन चार प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों—तीन महिलाओं के और एक पुरुषों के केंद्रों के कामकाज की निगरानी करते हैं जो इस गांव में खुले हैं। उन्होंने जन शिक्षण निलयम को पोस्टर, चार्ट आदि लगाकर बहुत सुंदर ढंग से सजाया है और उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय, नई दिल्ली सहित विभिन्न स्रोतों से उत्तर साक्षरता की पुस्तकें और साहित्य प्राप्त किया है।

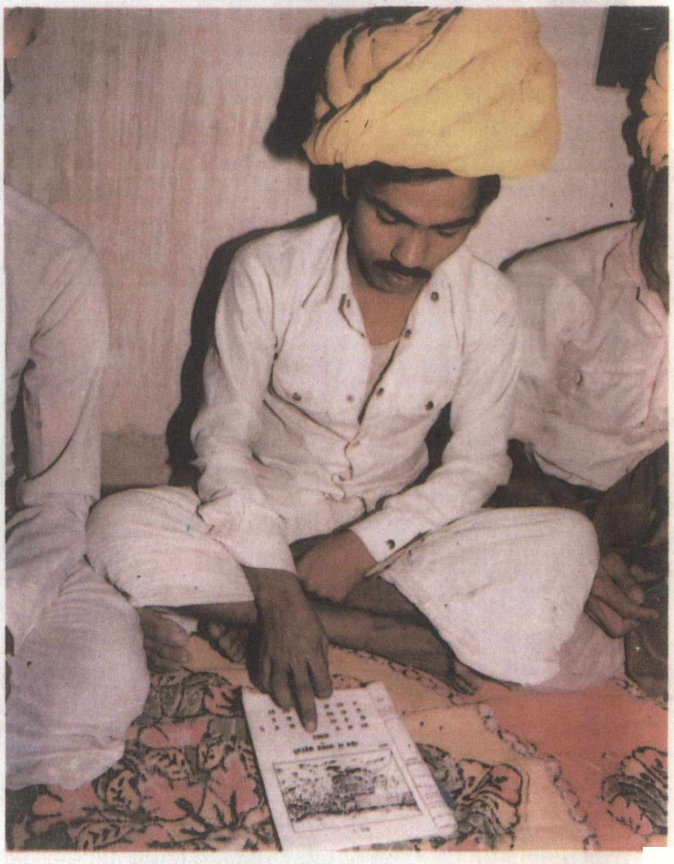

1987-88 के दौरान संपूर्ण ग्राम साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत 14 प्रौढ़ शिक्षा केंद्र— 7 पुरुषों के और 7 महिलाओं के खोले गए हैं और सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। अभी भी 15-35 आयुवर्ग के 240 प्रौढ़ निरक्षरों को साक्षर बनाया जाना है और निकट भविष्य में चार और प्रौढ़ शिक्षा केंद्र खोले जाएंगे। इस प्रकार दो वर्षों में इस गांव में 15-35 आयुवर्ग में लगभग 60-70 प्रतिशत साक्षरता प्राप्त करना संभव हो सका है।

अब दूसरी विकास-संस्थाओं को ग्रामीणों से संपर्क करना और अपने विभिन्न कार्यक्रमों के लिए उनकी भागीदारी और सहायता प्राप्त करना संभव होगा। यह बात ग्रामीण महिलाओं के मामले में विशेष रूप से संभव होगी क्योंकि संपूर्ण समुदाय के लिए साक्षरता के साथ साथ स्वास्थ्य और बच्चों की देखरेख का कार्यक्रम जोड़ने से अंततः अच्छे परिणाम निकलेंगे।

खरोली के मीना लोग

खरोली टोंक जिले के देवली ब्लॉक में बहुत भीतर जनजाति का गांव है मीना जनजाति यहां अपने प्राचीन ढंग से रहती है और भूमि पर निर्भर है। ये लोग कृषि मजदूरों और भवन निर्माण कारीगर के रूप में भी काम करते हैं और नौकरी की ख़ोज में देश के दूसरे भागों में यहां तक कि पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि में भी जाते हैं। उन्में से अधिकांश निरक्षर हैं और जब कभी उनके अपने इलाकेमें सूखा और अकाल पड़ जाता है तो उनके पूरे परिवारों को अपना घर बार छोड़कर जाना पड़ता है और उन्हें बहुत कठिनाई होती है। इस वर्ष बरसात ने उन्हें कुछ राहत पहुंचाई है और वे अपने गांव लौट कर खुश हैं। साक्षरता कौशल प्राप्त करने का समय भी है।

ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम ने इस दूरस्थ पिछड़े गांव में छः प्रौढ़ शिक्षा केंद्र खोल दिए हैं। यह कई प्रकार से पिछड़ा हुआ है–यह जीप वाली कोई सड़क नहीं है, निकटतम सड़क 10 किलोमेटर की दूरी पर है, बिजली या उपयुक्त स्वास्थ्य सुविधाएं भी नहीं हैं, पास में कोई डाकघर या बैंक भी नहीं है, गर्मियों में पानी की कमी होती है और खेत तथा वातावरण धूल भरा होता है। पेड़ बहुत ही कम हैं, पशुओं के लिए अच्छा चारा भी नहीं है। जीवन बड़ा कठोर और बहुत कटु होता है विशेषकर गर्मी के महीनों में। किंतु मीना लोग बहुत तगड़े होते हैं। उन्होंने प्रकृति की कठोरता और अप्रीतिकर क्षेत्र का साहसपूर्वक सामना किया है। वे अपने घर स्वयं बनाते और सजाते हैं और उनके घर बड़े साफ सुथरे हैं। उनके पुरुष लंबे और तगड़े हैं, रंग बिरंगी पगड़ियां पहनते हैं और लंबी लंबी मूंछें रखते हैं और उनकी महिलाएं स्वस्थ और सुंदर होती हैं और चांदी की पायलें और बाजुबंद पहनती हैं। वे अभी भी घूंघट निकालती हैं। आज भारत में उनकी जनजाति बड़ी बहादुर और समृद्ध है।

ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम को महिलाओं के केंद्र चलाने के लिए जनजातियों की पढ़ी लिखी पर्याप्त महिलाएं मिलने में कठिनाई हुई। एक प्रौढ़ शिक्षा केंद्र को पुरुष ही चला रहा है। इस गांव में एक भी ऐसी महिला नहीं है जो पूरी तरह साक्षर हो। इसलिए ग्रामीण महिलाओं के लिए बनाया गया कोई भी कार्यक्रम इस गांव तक नहीं पहुंचा है। उन्हें कई बातों का ज्ञान ही नहीं है–उपयुक्त स्वास्थ्य और बच्चों की देखभाल, गर्भवती माताओं की देखभाल, पोषण, परिवार नियोजन, रोगों की रोकथाम के टीके लगवाना, आदि। अब इन बातों और दूसरे राष्ट्रीय कार्यक्रमों के बारे में बुनियादी जानकारी प्रदान करने के लिए प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों के माध्यम से कुछ प्रयास किए जा रहे हैं। इनमें से कुछ महिलाएं अपने नाम लिखना और साधारण गिनती करना सीख गई हैं। किन्तु उन्हें अपना पढ़ने और लिखने आदि का ज्ञान बढ़ाने के लिए बहुत मेहनत करनी होगी। उसके बाद ही उन्हें महिला मंडल, चर्चा मंडल, महिलाओं के संगठन, आदि पसंद आएंगे क्योंकि वे सभी

इकट्ठी होकर लोकगीत गाने और आपस में अपनी विभिन्न समस्याओं पर बातचीत करने की शौकीन हैं। कहने का मतलब यह है कि वहां सीखने का वातावरण है जिसके कारण वे सब सीखने के लिए उत्सुक हैं। यह खुशी की बात है कि इस गांव में पुरुष और महिलाएं दोनों ही प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में पढ़ने आ रहे हैं और एक साथ साक्षर होने की कोशिश कर रहे हैं। इसके बहुत अच्छे परिणाम निकल सकते हैं।

फिर भी हमने यह महसूस किया कि यह कार्यक्रम जैसा इस समय है उससे अधिक गहन और कार्योन्मुख हो सकता था। ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता परियोजना की कार्य के प्रति बेहतर वचनबद्धता के कई कारण हैं। यह अब अनिश्चित काम है। केंद्र खुल गए हैं किन्तु उनकी निगरानी करने या उन्हें चलाने का काम ठीक प्रकार से नहीं हो रहा जिसके कई स्पष्ट कारण हैं। एक बार यह परियोजना शुरू कर दी जाए तो इसे निरंतर जारी रखना चाहिए और ऐसे क्षेत्रों में लगातार प्रयास बहुत जरूरी हैं। ऐसा करने से जितनी सफलता अब मिली है उससे अधिक मिल सकती थी। यदि इस छोटे गांव में साक्षरता फैलाने के लिए यह प्रारंभिक प्रयास ठीक ढंग से किया जाए तो यह इस गांव के दूसरे निरक्षरों को प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में प्रवेश लेने के लिए प्रेरणा देने का सबसे शक्तिशाली साधन बन सकता है।

इस गांव को अब संपूर्ण साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत अपनाने के लिए चुन लिया गया है। इसे चुनौती मानना चाहिए।

इसके लिए साक्षरता कार्य को अपने वर्तमान नेमी प्रकार के परियोजना संचालन से उभर कर वास्तविक अर्थ में मिशन के रूप में काम करना होगा और इस उद्देश्य के प्रति पूरी वचनबद्धता से अच्छी तरह जुट जाना होगा। इस प्रकार प्राप्त होने वाला अनुभव, इस प्रकार विकसित किया गया सहज बोध, अंर्तदृष्टि और जोरदार भावना आदि देशभर के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं।

बारखंडी कलां के लोकनर्तक

बारखंडी कलां टोंक ब्लाक के भीतरी भाग में धूलभारा गांव है जहां अधिकांश लोग अनुसूचित जातियों के हैं। यह टोंक से लगभग 45 किलोमीटर दूरी पर है। यहां रहने वाले लगभग 450 परिवारों में किसान, चमड़े का काम करने वाले लोग और भूमिहीन मजदूर हैं।

राजस्थानी जूते बनाना इन इलाकों का लघु उद्योग है। सारे परिवार इस धंधे में लगे हुए हैं। वे बहुत आकर्षक जूते बनाते हैं जिन्हें स्थानीय लोग पहनते हैं। आजकल उन्हें प्रत्येक जोड़ा जूतों के सामान सीझे हुए चमड़े और दूसरी चीजों पर ही लगभग 25 रुपए खर्च करने पड़ते हैं। उन्हें प्रति जोड़ा 40 रुपए मिलते हैं। इस प्रकार वे मुश्किल से 15 रुपए ही एक जोड़े पर अपनी मज़दूरी के दाम ले पाते हैं। एक व्यक्ति का एक जोड़ा बनाने में पूरा दिन लग जाता है जिसका यह मतलब हुआ कि वह केवल 15 रुपए प्रति दिन ही कमाता है जो बहुत कम हैं। चूंकि वहां कोई दूसरे उपयुक्त काम धंधे नहीं हैं, इसलिए उन्हें मजबूर होकर अपने परंपरागत धंधे जारी रखने पड़ते हैं।

ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता परियोजना ने इस गांव में छह प्रौढ़ शिक्षा केंद्र खोले हैं—तीन पुरुषों के लिए और तीन महिलाओं के लिए। उनमें से पांच अनुसूचित जनजातियों के लिए हैं। उनमें से सब इस वर्ष जुलाई से चालू हैं।

इनमें 15-35 आयुवर्ग के लोगों को पढ़ाया जाता है। महिला केंद्र पुरुष केंद्रों की तुलना में अधिक सक्रिय हैं। अक्तूबर में एक जन शिक्षण निलयम भी इस गांव में खोल दिया गया है। यह एक बड़े दो मंजिले भवन में खोला गया है। जन शिक्षण निलयम के भीतर और बाहर दोनों ही में काफी जगह है।

मिट्टी से पुते घरों की कतारें, जो साफ सुथरे हैं, जिनकी दीवारों पर सफेद रंग में परंपरागत चित्रकारी करके सजाया गया है, लोगों को इस गांव की ओर आकर्षित करती हैं।

हमारे दौरे के अवसर पर प्रौढ़ निरक्षरों ने अनुदेशकों और प्रेरकों की मदद से लोकनृत्यों का सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया था। "घोड़ा नृत्य" एक महत्वपूर्ण परंपरागत चीज़ है। लोग "ढोलक" बजाते हुए गाने गाते हैं और नर्तक लोग संगीत के अनुसार नृत्य करते हैं और गांव के दर्शक आनंदविभोर हो जाते हैं। इस अवसर पर ऐसे प्रेरणात्मक गीत भी गाए गए जिनमें शिक्षा और साक्षरता के लाभ बताए गए थे और निरक्षरों से अनुरोध किया गया था कि वे गांव में खोले गए प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में दाखिला लें।

सीखने का वातावरण बनाने के लिए बहुत प्रयास की जरूरत है। किंतु एक बार ऐसा वातावरण बन जाए तो हम स्थायी साक्षरता सुनिश्चित कर सकते हैं। लोक संचार साधन जैसे कि इस गांव में हैं जिनसे संभावित शिक्षार्थी पहले ही परिचित हैं साक्षरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और निरंतर सहयोग और अभ्यास की संभावनाएं प्रदान कर सकते हैं। जन शिक्षण निलयम अब नवसाक्षरों को ऐसे अवसर प्रदान करने में मदद करेगा जिससे वे अपने हुनर बढ़ा सकें, ऐसे हुनरों का प्रयोग अपने लाभ के लिए और कुल मिलाकर समुदाय के लाभ के लिए कर सकें।

अजमेर प्रौढ़ शिक्षा संघ

1970 में शुरू हुआ यह संघ अजमेर में और उसके चारों ओर पिछले लगभग 18वर्ष से साक्षरता को बढ़ावा देने का काम करता आ रहा है। इसने 15-35आयुवर्ग के लिए प्रौढ़ शिक्षा के साथ साथ 6-14 आयुवर्ग के लिए अनौपचारिक शिक्षा शुरू की है। वर्ष 1974-75से लेकर 1983-84तक इसने ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा के अंर्तगत लगभग 2872लड़के और लड़कियों को शिक्षा प्रदान की है।

इस समय इसने 100अनौपचारिक शिक्षा केंद्र लागू किए हैं जिनमें कुल 3210व्यक्तियों ने नामांकन करवाया है और 300प्रौढ़ शिक्षा केंद्र लागू किए हैं जिनमें कुल नामांकन 9000हैं। वह घरेलू उद्योग कार्यक्रम, अनुसूचित जाति और युवा प्रशिक्षण और रोज़गार/ ग्रामीण युवकों का स्वरोजगार प्रशिक्षण (SCYTE/TRYSEM) कार्यक्रम, महिला विकास कार्यक्रम आदि भी शुरू कर रहा है। उदाहरण के लिए ट्राइसम के अंर्तगत वह फल परिरक्षण, चमड़ा रेक्सीन, छींट, चित्रकारी बांधनू की रंगाई, जूती/चप्पल बनाने ब्लाक छापने, बुनाई करने, कार्ड बोर्ड के डिब्बे बनाने, दस्तकारी आदि का महिलाओं को प्रशिक्षण देने के लिए 13केंद्र चला रहा है। प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में पढ़ने वाली महिलाओं को इनमें भी अवसर मिलता है।

घरेलू उद्योग कार्यक्रम के अंतर्गत उसने अब तक 315महिलाओं को सिलाई में, 440को गोटे आरीतारी के काम में, 369को फल परिरक्षण में और 442को कशीदाकारी में प्रशिक्षित कर दिया है।

उसके द्वारा चलाए जा रहे 300प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में से 127पुरुषों के लिए है, 129महिलाओं के लिए हैं और 44मिश्रित हैं। कुल नामांकित 9147 व्यक्तियों में से अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के क्रमशः 1779और 411थे।

यह दल छींट चित्रकारी के केवल दो केंद्रों में और अल्पसंख्यक समुदाय के एक केंद्र में ही जा सका जहां शिक्षा का माध्यम उर्दू है। अजमेर में ऐसे नौ केंद्र हैं।

अंदेरकोट में उर्दू केंद्र

ये महिलाएं अपनी मातृभाषा उर्दू पढ़ना और लिखना सीख रही हैं। किंतु इसके साथ साथ वे गोटा, आरीतारी, सजावट का सामान बनाने, आदि का प्रशिक्षण ले रही हैं उन्हें महिलाओं और बच्चों की देखरेख, रोगों से बचाव के टीके लगवाने और परिवार नियोजन की जरूरत, आदि के बारे में भी बताया जाता है।

नाले बाज़ार में छींट चित्रकारी केंद्र

गंदी बस्तियों में रहने वाली महिलाएं इस केंद्र से लाभ उठा रही हैं। पंद्रह महिलाएं इस केंद्र में सीख और कमा रही हैं। यह महिलाओं के लिए प्रौढ़ शिक्षा केंद्र होने के साथ साथ ट्राइसम कार्यक्रम के अंर्तगत भी केंद्र है। संघ ने साक्षरता को ट्राइसम से जोड़ने में सफलता पाई है।

उन्हें लगभग छह महीने छींट चित्रकारी का प्रशिक्षण दिया जाता है। इस अवधि में उन्हें 125 रूपए प्रतिमास छात्रवृत्ति भी मिलती है। छींट चित्रकला की अच्छी मांग है और शिक्षर्थी एक बार इस कला को सीख जाएं तो 250 रुपए या इससे भी अधिक प्रतिमास कमा सकते हैं।

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से लाभांवित विचाराधीन कैदी

बांसवाड़ा ज़िला जेल आज साक्षरता गतिविधि से गुंजायमान हो रही है। यह सब राज्य प्रौढ़ शिक्षा परियोजना द्वारा किए गए प्रयासों के कारण ही है।

यह लगातार दूसरा वर्ष है कि इस जेल में विचाराधीन पुरुष कैदियों के लिए प्रौढ़ शिक्षा केंद्र चल रहा है। इस जेल में 90व्यक्ति हैं। कुल मिलाकर 27 विचाराधीन कैदी प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में नामांकित हैं और 30अन्य व्यक्तियों को जो नवसाक्षर हो चुके हैं, अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए उत्तर साक्षरता सामग्री दी गई है।

प्रौढ़ शिक्षा केंद्र को नवल सिंह नामक एक विचाराधीन कैदी चलाता है जो पिछले तीन वर्षों से जेल में है। वह 9वीं कक्षा तक पढ़ा था और पिछले वर्ष उसने 10वीं कक्षा की परीक्षा स्वतंत्र (प्राइवेट) छात्र के रूप में दी और उसमें वह पास हो गया है। एक बार फिर यह सब राज्य प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम और जेल अधिकारियों दोनों ही की निरंतर रूचि और कोशिश से ही संभव हुआ।

नियंत्रित दशाओं में इस केंद्र ने ग्रामीण क्षेत्रों के सामान्य प्रौढ़ शिक्षा केंद्र की तुलना में कहीं बेहतर परिणाम प्राप्त किए हैं। प्रौढ़ शिक्षार्थियों के पास सीखने के लिए समय और मार्गदर्शन होता है और वे शीघ्र सीख जाते हैं।

जेल अधिकारियों को विशेष प्रसन्नता इस बात की है कि ये विचाराधीन कैदी जब जेल में आए थे तो निरक्षर थे किंतु अपने गांव को जब लौटेंगे तो साक्षर होंगे और बदले हुए व्यक्ति होंगे जो उपयोगी और सार्थक जीवन बिताना चाहेंगे और इस देश के नागरिकों के रूप में अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों को समझेंगे। ये अधिकारी कमाई के धंधे शुरु करवाकर और ऐसे धंधों का प्रशिक्षण देकर साक्षरता अभियान को कार्यात्मक सहायता प्रदान करने का प्रयास भी कर रहे हैं।

अधिकांश विचाराधीन कैदी आदिवासी लोग हैं और जब वे लौटकर जाएंगे तो वे अपने अपने गांव के साक्षरता कार्यक्रम में अनुदेशक या प्रेरक के रूप में उपयोगी कार्य कर सकते हैं और राष्ट्रीय साक्षरता मिशन में योगदान कर सकते हैं।

लांबी पट्टी साक्षरता की राह पर

लांबी पट्टी बांसवाड़ा जिले के घटोल ब्लॉक में एक आदिवासी गांव है। प्रौढ़ शिक्षा का काम इस भीतरी क्षेत्र में पिछले तीन चार वर्ष से लगातार चल रहा है। इस वर्ष चार प्रौढ़ शिक्षा केंद्र खोले गए हैं – दो महिलाओं के लिए, एक पुरुषों के लिए और एक मिश्रित केंद्र है। इस गांव को साक्षर बनाने का पूरा श्रेय भगतजी के नाम से प्रसिद्ध श्री कचरू को जाता है। वह लगभग 51 वर्ष के हैं और पिछले चार वर्षों से अनुदेशक का काम कर रहे हैं। इस गांव का प्रत्येक व्यक्ति उन्हें प्यार करता है और आदर देता है। उन्हें स्थानीय बोली बागड़ी पर बहुत अधिकार है। वह पुराने जमाने में नौवीं तक पढ़े थे और अपने शिक्षार्थियों को बड़ी सरलता से पढ़ा सकते हैं। वह उन्हें सहज और निश्चिंत कर देते हैं और कृषि के उन्नत तरीकों आदि समेत जीवन और रहन सहन के बारे में कई बातें बताते हैं। उनका अपना ही तरीका है जो संवेदनशील है और प्रभावी भी है। उनके नेतृत्व में कुछ ही वर्षों में यह गांव साक्षरता कार्यक्रम पूरा कर सकता है। राज्य प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम भी लोगों की सतत शिक्षा के लिए जन शिक्षण निलयम खोलना चाहता है।

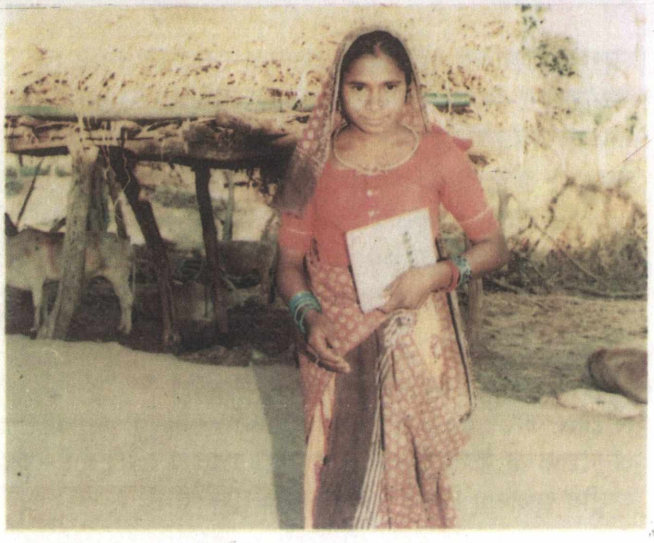

मोटा गांव पूर्ण साक्षरता के लिए चुना गया

बांसवाड़ा जिले के घटोल ब्लॉक में मोटा गांव संपूर्ण गांव साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत पूर्ण साक्षरता को प्राप्त करने के लिए चुना गया है।

इस योजना के अंतर्गत गांव के सभी निरक्षरों को साक्षरता प्रदान की जाएगी चाहे उनकी आयु कितनी भी हो। अनौपचारिक योजना के अंतर्गत 6-14 आयुवर्ग को साक्षरता प्रदान की जाएगी, प्रौढ़ शिक्षा 15-35 आयुवर्ग को और "हर एक पढ़ाए एक" 36 और उससे अधिक आयुवर्ग को साक्षरता प्रदान करेंगे।

कुल मिलकार 1003 निरक्षर हैं – 201 तो 6-14 आयुवर्ग के हैं, 339 निरक्षर 15-35 आयुवर्ग के और 463 का आयुवर्ग 35 से अधिक वाला है।

गांव के लोगों में बहुत जोश है और उन्होंने इस कार्यक्रम के बारे में "साक्षरता गीत" तैयार किया है जिसे वे टेप करके सुनाना चाहते हैं, जिससे गांव के लोगों को प्रेरणा मिल सके। सभी बैंकों, सेवा और शैक्षिक संस्थाओं, लायंस क्लबों आदि ने मदद करने का वचन दिया है। नेहरू युवक केंद्र और यूथ क्लब भी इस काम में सहयोग दे रहे हैं। राज्य प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम पठन पाठन सामग्री और दूसरी सहायक सामग्री प्रदान करेगा। पहले ही 14 प्रौढ़ शिक्षा केंद्र खोले जा चुके हैं। इस गांव में चार अनौपचारिक शिक्षा केंद्र भी चल रहे हैं। यह भी जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी के चार्ज में हैं और उनकी मदद के लिए एक सहायक परियोजना अधिकारी है।

यह सचमुच अदभुत अनुभव रहा कि हम सक्रिय कार्यकर्ताओं से मिले और बातचीत की और जाना कि लोगों के सहयोग से एक वर्ष में अपने गांव को पूरी तरह साक्षर बनाने की उनकी कितनी इच्छा और पक्का इरादा है।

विचाराधीन कैदी पढ़कर प्रसन्न हैं

राजस्थान के दौसा जिला जेल में लगभग 25 विचाराधीन कैदी प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में पढ़कर प्रसन्न हैं जो विशेष रूप से उन्हीं के लिए खोला गया है। अशोक कुमार मुदगिल उनके अनुदेशक हैं जो स्थानीय शिक्षक भी हैं। यह पहला अवसर है कि ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरताकार्यक्रम, दौसा ने जेल अधिकारियों की मदद से कैदियों के लिए केंद्र खोला है। यह केंद्र बहुत अच्छी तरह चल रहा है और प्रगति भी अच्छी है क्योंकि यह नियंत्रित दशाओं में काम कर रहा है और शिक्षार्थी प्रेरित हैं और उनके पास पढ़ाई के लिए काफी फालतू समय होता है।

वे अच्छा गाते हैं। वे जो साक्षरता गीत गाते हैं उसमें शीघ्र ही निरक्षरत मिटाने के लिए राष्ट्र के संकल्प को बताया गया है। यह बहुत मर्मस्पर्शी गीत है, बहुत प्रभावकारी और प्रेरणास्पद भी है।

हम अपने देश को साक्षर बनाके छोड़ेंगे।
दिल में ज्ञान दीपक जलाके छोड़ेंगे।
हम अपने देश को .....।
हर अनपढ़ को घर से बुलाके लाएंगे।
सभी को प्यार से पुस्तक पढ़ाके छोड़ेंगे।
हम अपने देश को.....।

महिला लोक जागृति समिति

''महिला केंद्र जागृति समिति'' जयपुर एक पंजीकृत स्वयंसेवी संगठन है जो महिलाओं और बच्चों के कल्याण के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से काम कर रहा है। यह संगठन अनौपचारिक रूप से 15 जून, 1978 को बना और 29 मार्च, 1979 को सोसाइटीस एक्ट 1961 के अधीन पंजीकृत एक पूर्ण संगठित निकाय बन गया।

यह महिलाओं की स्वयंसेवी संस्था पिछले कुछ महीनों से जयपुर जिले के मुहाना क्षेत्र में 60 प्रौढ़ शिक्षा केंद्र लागू कर रही है। उनकी सफलता का श्रेय साक्षरता को कमाई के कामधंधे के हुनर से जोड़े जाने को दिया जा सकता है जैसे कपड़े की छपाई जिसके लिए संगानेर प्रसिद्ध है। वे ग्रामीण युवकों के स्वरोजगार प्रशिक्षण (TRYSEM) और महिलाओं की दूसरी योजनाओं के अंतर्गत जो हुनर देते हैं उनमें कपड़े बनाना, सिलाई, कढ़ाई आदि शामिल हैं।

ग्रामीण महिला पोलिटेक्निक प्रोग्राम लगभग 45 महिलाओं को साक्षरता के हुनर सीखने के साथ साथ कमाई करने में भी मदद करता है।

इन कारणों से और समाज की दूसरी गतिविधियों के कारण महिलाओं में साक्षरता की मांग है। वे महिलाओं को जन सहयोग का प्रशिक्षण भी देते हैं, महिला मज़दूरों आदि के लिए क्रेच भी चलाते हैं। जिन महिला शिक्षार्थियों को इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शामिल किया गया है उन्हें 125 रुपए प्रति मास छात्रवृत्ति मिलती है।

ऊंटों के देश में

ऊंटों के बिना राजस्थान की कल्पना ही नहीं की जा सकती। ये पशु राजस्थान के ग्रामीण जीवन को विशेष मज़बूती और शक्ति प्रदान करते हैं और इसमें रंग भर देते हैं। उदयपुर, बांसवाड़ा आदि जैसे कुछ जिलों को छोड़कर शेष में ऊंट कृषि के काम में, उपज को मार्किट ले जाने में और दूसरे कई तरीकों से मदद करते हैं। वे मेलों और उत्सवों में आकर्षण का केंद्र होते हैं। अकेले पुष्कर मेले में ही हजारों ऊंट हर वर्ष बिक्री के लिए लाए जाते हैं। देश की सीमाओं की रखवाली में उनकी भूमिका कम नहीं है। वे टनों सामान, उठा सकते हैं और मरुस्थल क्षेत्रों में संकट के समय मित्र का काम करते हैं। मरुस्थल राजस्थानी के लिए तो ऊंट मित्र भी है और मार्गदर्शक भी और वह उसे छोड़ देने की बात कभी सोच नहीं सकता। वह उसे अपने बच्चों की तरह ही पालता है। इन क्षेत्रों की कई दंतकथाओं में उड़न ऊंटों, चुलबुलों और शूरवीरता का वर्णन किया गया है। निस्संदेह ऊंटों को ग्रामीण राजस्थानी जीवन का अभिन्न अंग ही समझा जाता है। हमारे जैसे शहरी लोगों को ऊंट की सवारी आज भी आनंद प्रदान करती है। कई विदेशी पर्यटक राजस्थान में हर वर्ष ऊंट की सवारी का आनंद लेते हैं। ऊंट साक्षरता के काम में भी मदद करते हैं। जयपुर की एक स्वयंसेवी संस्था बालरस्मी सोसाइटी ने टोंक जिले के बस्सी ब्लाक में ऊंट-गाड़ी चल पुस्तकालय शुरू किया है। इस उत्तर साक्षरता कार्यक्रम में पंद्रह गांव शामिल किए गए हैं। राज्य शिक्षा मंत्री ने हाल ही में इस ऊंट गाड़ी पुस्तकालय सेवा का उदघाटन किया। उक्त सोसाइटी इस क्षेत्र में 30 प्रौढ़ शिक्षा केंद्र पहले से चला रही है।

साक्षरता के लिए ऊंटों के प्रयोग से दीवारों का प्रयोग। राजस्थान में गांवों में मिट्टी से पुती हुई दीवारों को सजाने की प्रथा है। महिलाएं इस कला में निपुण होती हैं। घरों को सजाने के साथ साथ, इन दिनों दीवारों पर लिखकर साक्षरता को बढ़ावा दिया जा रहा है। साक्षरता के नारे दीवारों पर लिखे जाते हैं। जहां संपूर्ण साक्षरता कार्यक्रम चालू है वहां ऐसे कार्यक्रम का ब्यौरा पंचायत

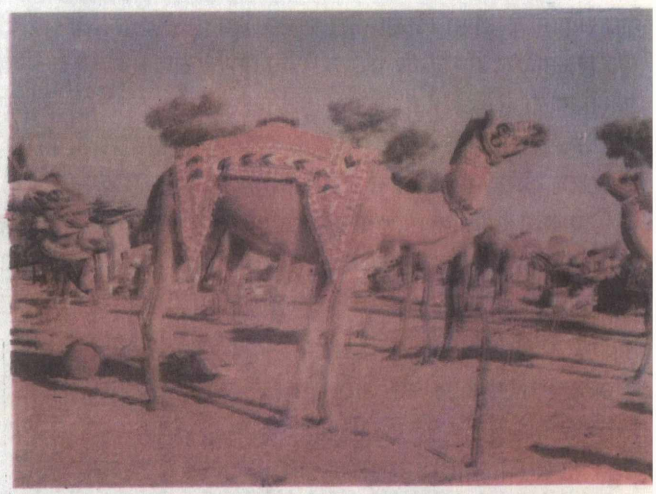

घरों आदि में दिया जाता है। लोग अपने आपको साक्षर बताकर गर्व का अनुभव करते हैं। इस प्रकार मोटे अक्षरों में "साक्षर परिवार" लिखने का मतलब गांवों में ऐसे घर से है जिसे संपूर्ण साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षा प्रदान की गई है।

* * *

कुछ गांवों मे प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों पर हारमोनियम और दूसरे बाजों के साथ "सत्संग" भी देखने को मिलता है। इसका कारण यह है कि सभी प्रौढ़ शिक्षार्थी भजन गाने में बहुत अच्छे हैं और सप्ताह में एक बार वे प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में भी गाने बजाने का आयोजन करते हैं। यह बहत ही प्रेरणात्मक और प्रभावकारी बात है। सारा वातावरण भक्ति और शरीर तथा मन की शुद्धि की लालसा से भर जाता है।

चूंकि कोई निश्चित सिद्धांत यह सुनिश्चित नहीं कर सकते कि लोग साक्षरता केंद्रों में दाखिला लें, कक्षाओं में नियमित रूप से आएं और कौशल सीखें तथा ऐसे कौशलों का जीवन आदि में प्रयोग करें, इसलिए "सत्संग" जैसी बैठकें जो कुछ भी अच्छा

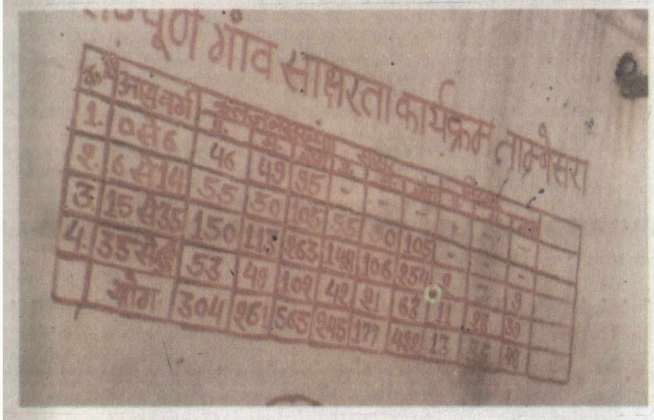

काम कर सकती हैं उसका पूरा पूरा उपयोग हमारे गांवों में करना होगा। इससे मौखिक और लिखित दोनों प्रकार की साक्षरता फैलाने में मदद मिल सकती है। इससे सीखने के लिए अनिवार्य शांति और प्रशांति सुनिश्चित करने में भी मदद मिल सकती है। संगीत समुदाय की भावनाओं और प्रयोजन की अभिन्नता को भी बढ़ावा दे सकता है। इसलिए राजस्थानी प्रयास अंत में लाभदायक और सफल होगा ही।

* * *

राजस्थान कार्यक्रम की सुखद बात जन शिक्षण निलयमों का प्रयोग सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए करना है। टोंक और दूसरे स्थानों में जन शिक्षण निलयम आकर्षण के केंद्र हैं जहां परंपरागत लोक नृत्य देखने, लोक संगीत सुनने, टी वी देखने आदि के लिए सारा गांव इकट्ठा होता है। यह अच्छी प्रगति है और साक्षरता कार्यक्रम को आगे ले जा सकती है। भले ही वे तत्काल साक्षर हो जाते हैं या नहीं, गांव के लोग जन शिक्षण निलयमों में इनके सांस्कृतिक कार्यक्रमों के कारण आते हैं।

* * *

एक और उल्लेखनीय बात न केवल निरक्षरता से धर्मयुद्ध बल्कि "मृत्यु भोज", "बाल विवाह", "सती", "दहेज", "कन्याबध", "छुआछूत" आदि जैसी सामाजिक बुराइयों से भी धर्मयुद्ध थी।

प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में शिक्षार्थियों को इन सामाजिक बुराइयों के बारे में बताने के प्रयास किए जाते हैं। बहुत से प्रौढ़ शिक्षा केंद्र "मृत्यु भोज" का खर्च घटाने में सफल हो गए हैं। लोगों ने प्रण किया है कि वे ऐसे भोजों में भाग नहीं लेंगे।

ग्रामीण समाजों की इनमें से बहुत सी बुराइयों के लिए महिलाओं में बड़े पैमाने पर निरक्षरता जिम्मेदार है। राजस्थान कोई अपवाद नहीं है। महिलाओं में जैसे जैसे जागृति बढ़ेगी वैसे वैसे सामाजिक दिशा में सुधार स्पष्ट दिखाई देगा।

* * *

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration,
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016 D-8431
DOC, No 17-1-95

प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम ने कार्यकर्ताओं और दूसरे लोगों को कैसे लाभ पहुंचाया है? इस प्रश्न का उत्तर देना बहुत कठिन है। किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में हमने जो कुछ देखा उससे हम यह विश्वास के साथ कह सकते हैं कि साक्षरता ने अंधविश्वास, छूआछूत आदि के क्षेत्रों पर हमला किया है। लोग अब इस बात पर सोच विचार करते हैं कि वे जो कुछ करना चाहते हैं वह ठीक है या नहीं। हो सकता है कि कई सामाजिक और दूसरे दबाव अभी भी विद्यमान हों किंतु इस तथ्य से बड़ी मदद मिली है कि उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में ऐसे मसलों के बारे में प्रश्न करने और उन पर चर्चा करनी शुरू कर दी है। अनुदेशकों और दूसरे लोगों को भी कुछ ठोस लाभ मिले हैं। उदाहरण के लिए दौसा में ग्रामीण कार्यात्मक, साक्षरता कार्यक्रम परियोजना के अंतर्गत 72 महिला अनुदेशकों को महिला प्रधानों – अल्प बचत योजना के एजेंटों – के रूप में प्रशिक्षित किया गया है। उन्हें इस योजना में कुल जमा राशियों पर चार प्रतिशत कमीशन मिलता है जिससे उनकी आय बढ़ी है। प्रौढ़ शिक्षा ने यदि पूर्णकालिक आधार पर नहीं तो कम से कम अंशकालिक आधार पर उनकी कमाई का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। राजस्थान के टोंक जिले के कई गांवों में भूतपूर्व प्रौढ़ शिक्षा अनुदेशकों को सरपंच चुन लिया गया है और अपने नए काम से वे बहुत खुश हैं और मानते हैं कि साक्षरता के लिए किए गए काम का उन्हें पुरस्कार मिल गया। वे सब अपने अपने क्षेत्रों में साक्षरता फैलाने के लिए अधिक रुचि ले रहे हैं और पहल कर रहे हैं।

साक्षरता के बारे में एक और रोचक बात जेलों में कार्यक्रमों का सफल होना है। यह कार्य जोर पकड़ रहा है और लगभग सभी जिलों में विचाराधीन कैदियों और दूसरे कैदियों के लिए अब नियमित कार्यक्रम चल रहे हैं। इस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय उन नियंत्रित दशाओं को दिया जा सकता है जिनमें कैदी जल्दी सीख सकते हैं। वे कैद से छूटने के बाद अनुदेशक, प्रेरक आदि के रूप में मदद कर सकते हैं।

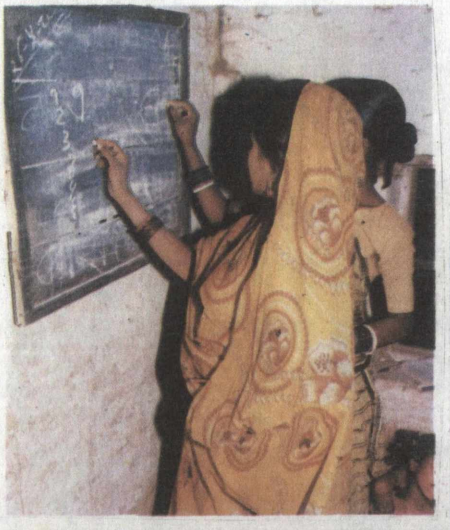

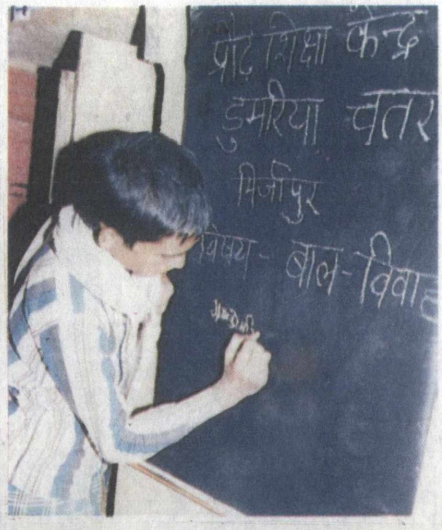

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र
डुमरिया
मिर्जापुर

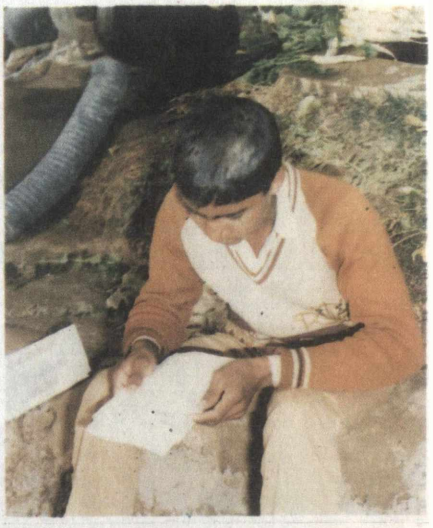

नया गांव के झाड़ू बनाने वाले

''नया गांव'' देहरादून नगर के बाहरी क्षेत्र में बसा एक गांव है जिसमें अनुसूचित जातियों के लोग रहते हैं। वास्तव में यह एक बड़ा गांव है जिसमें अधिकतर भूमिहर मज़दूर बसे हुए हैं। वे लंबी लंबी जाली घास इकट्ठी करते हैं, उसे सुखाते हैं और सबसे उपयोगी ''झाड़ू'' बनाते हैं जिसकी हर घर में जरूरत पड़ती है।

बेशक उन्हें उनकी मेहनत की तुलना में कम मेहनताना मिलता है। उन्हें जंगल की उपज इकट्ठा करने के लिए वन विभाग से लाइसैंस लेना पड़ता है। जिन लोगों के पास लाइसैंस नहीं होते उन्हें घास इकट्ठा करने के काम में पकड़े जाने पर जुर्माना हो जाता है। उन्हें झाड़ू बनाने में बड़ी मेहनत करनी पड़ती है किंतु बिचौलिए उन्हें केवल 10 पैसें प्रति झाड़ू देते हैं जबकि यह बाज़ार में एक रुपए या इससे भी अधिक दाम पर बिकता है।

इस वर्षअच्छी बरसात हुई है। घास बहुत है और वह भी बहुत मोटी किस्म की है जिससे रस्से भी बन सकते हैं। गांव के लोगों को जब ''झाड़ुओं'' के लिए घास नहीं मिलती तो वे ''चटाइयां'' और ''टोकरियां'' भी बनाते हैं।

ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम देहरादून ने यहां पुरुष केंद्र खोला है और यह इस वर्ष अप्रैल से चालू है। प्रौढ़ शिक्षा केंद्र गांव के मध्यमें एक झोपड़ी में है जो अनुदेशक मंजीत सिंह, एम. ए. की है। प्रौढ़शिक्षा केंद्र की दीवारों को पोस्टरों से बहुत अच्छी तरह सजायागया है। पठन पाठन सामग्री, स्लेटें आदि भी अच्छी तरह रखी गई हैं।

यद्यपि तीस प्रौढ़ निरक्षरों का नाम इस केंद्र में दर्ज है तथापि केवल 15-20ही नियमित रूप से पढ़ने आते हैं। मंजीत सिंह, जो बेरोजगार युवक है, अपने गांव के लोगों को पढ़ाने में बहुत रुचि लेता है।वह जब कालेज में पढ़ता था तो उसने ''हर एक पढ़ाए एक'' में भाग लिया था और इससे पहले वर्षों में भी उसने प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में अनुदेशक के रूप में काम किया है। उसने लगभग 50 साक्षरता किटें भी गांव में बांटी हैं। और वह साक्षरता फैलाने में युवा पुरुषों और महिलाओं की मदद ले रहा है।

शिक्षार्थियों में उत्साह है। वे यह समझ गए प्रतीत होते हैं कि साक्षरता की जरूरत है। किंतु बेरोजगारी उनकी तत्काल समस्या है। वे उपयोगी कौशल सीखना चाहेंगे क्योंकि उन्हें जो परंपरागत कौशल आते हैं उससे उन्हें अधिक आय नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त उनकी जरूरतें और इच्छाएं भी बढ़ गई हैं। वे साक्षर तो अवश्य बनना चाहते हैं किंतु साथ ही अधिक धन भी कमाना चाहते हैं। यही उनकी आशाएं और आकांक्षाएं हैं।

साक्षरता के साथ साथ कार्यात्मक कौशलों से उनकी प्रगति और समृद्धि के नए मार्ग खुल सकते हैं। उनमें प्रगति की लालसा है और इसके लिए काम करने की शक्ति भी है। उन्हें तो केवल थोड़ी मदद, मार्गदर्शन और सहायता की जरूरत है। यह सहकारिता के रूप में या सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक आदि से ऋण के रूप में भी हो सकती है।

नीबूंवाला के धूप बनाने वाले

एक सक्रिय अनुदेशक क्या कर सकता है और प्रौढ़ शिक्षार्थी इससे कैसे लाभ उठा सकते हैं, यह बात देहरादून जिले के कोलाघाट ग्राम सभा के अंतर्गत एक छोटे से गांव नींबूवाला मे देखी जा सकती है।

श्रीमती विजयराजा वंशी अपने शिक्षार्थियों को न केवल साक्षरता प्रदान करती आ रही हैं बल्कि उन्होंने महिला सहकारी समिति बनाकर उन्हें संगठित भी कर दिया है। वे महिला शिक्षार्थी अब धूप बनाने के काम में लगी हुई हैं और कुछ पैसा कमा लेती हैं। धूप यूनिट –महिला सहकारी उद्योग को महिलाओं की सहकारी समिति चलाती है जो पंजीकृत भी हो चुकी है। यह यूनिट इस वर्ष जून में एक भव्य समारोह में जिला कलक्टर द्वारा खोली गई थी। महिला शिक्षार्थी इस उत्पादन केंद्र में अपने फालतू समय में लगभग दो घंटे काम करती हैं और चार रुपए प्रतिदिन कमा लेती हैं। उत्पादन बढ़ रहा है। वे स्थानीय मांग को पूरा करने और धीरे धीरे बिक्री बढ़ाने की भी आशा करती हैं। उन्हें तत्काल जिस बात की जरूरत है वह है किसी बैंक से या किसी दूसरी विकास एजेंसी से कुछ वित्तीय सहायता की।

श्रीमती बंशी की बहुत नवीन कल्पनाएं हैं और उन्होंने प्रौढ़ शिक्षार्थियों और अपने बच्चों दोनों ही के लिए अपनी ही पाठन सामग्री तैयार करने में इनका प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए शिक्षार्थियों को विभिन्न आक्रार जैसे कि गोल (वृत्त), वर्ग त्रिकोण, आदि समझाने के लिए उन्होंने विभिन्न रंगों में ऐसी आकृतियां काटकर डिब्बे में चिपकाई हुई हैं। इससे उन्हें शिक्षार्थियों को विभिन्न रंग बताने में भी मदद मिलती है, विशेषकर अनौपचारिक शिक्षा वाले शिक्षार्थियों को बताने में। गिनती सिखाने के लिए उन्होंने मिट्टी के फूलों की मालाएं बनाई हुई हैं। प्रत्येक माला में दस फूल हैं। यह बहुत सरल और बिना लागत वाली चीज है जिसे कोई भी बना सकता है। इसके अतिरिक्त शिक्षार्थियों को विभिन्न फल और सब्जियां बताने के लिए उन्होंने गत्ते के डिब्बे में अपनी ही स्लाइड चित्रों की गोल गड्डी वाली जुगत बनाई हुई है। इस गत्ते के डिब्बे में देखने के लिए खिड़की बनाई हुई है। चित्रों की गोल गड्डी को ऊपर नीचे जैसा चाहें घुमाया जा सकता है।

उनकी अधिकांश शिक्षार्थी पिछड़े वर्गों की हैं। उन्होंने गांव में 19 साक्षरता किटें भी बांट दी हैं और वह साक्षरता के प्रयास में दूसरों का सहयोग लेने की कोशिश कर रही हैं।

100 रुपए मासिक मानदेय के बदले वह बहुत काम कर रही हैं – प्रौढ़ शिक्षा केंद्र और अनौपचारिक शिक्षा केंदों को चला रही हैं, साक्षरता किटें आदि बांट रही हैं। वह केवल हाई स्कूल तक पढ़ी हैं किंतु साक्षरता मिशन के प्रति उनकी निष्ठा और वचनबद्धता पूरे देश के अन्य अनुदेशकों द्वारा अनुकरणीय है।

खुशालपुर में अल्पसंख्यक समुदाय के लिए केंद्र

खुशालपुर देहरादून जिले के सहसरपुर ब्लाक में धूलभरा गांव हैं। यहां लगभग 300 परिवार रहते हैं। इनमें से अधिकांश मुस्लिम समुदाय के हैं। यहां निरक्षरता का बोलबाला था किंतु प्रौढ़ शिक्षा ने गांव की महिलाओं को कुछ हद तक साक्षर बनाने में मदद की है। इस गाव में लगभग चार वर्ष पहले एक प्रौढ़ शिक्षा केंद्र शुरू किया गया था। एक वर्ष बाद इसे बंद कर दिया गया। अब इस वर्ष अप्रैल से फिर एक और केंद्र महिलाओं के लिए शुरू किया गया है। यह ठीक से चल रहा है। शिक्षार्थी बहुत रुचि लेते हैं। भर्ती किए गए 30 शिक्षार्थियों में लगभग 20 नियमित रूप से पढ़ने आते हैं।

लगभग 50 साक्षरता किटें भी गांव में बांट दी गई हैं ताकि और भी लोग साक्षरता प्राप्त कर सकें।'

महिलाएं सिलाई, कढ़ाई, सूईकारी आदि सीखने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने कुछ बहुत उपयोगी और आकर्षक लेस और कढ़ाई का काम भी किया है।

इस गांव में विशेष यह बात देखने में आई कि लगभग सभी शिक्षार्थी 15-20 आयुवर्ग की थीं और उनमें से अधिकांश अविवाहित थीं। वे कोई ''पर्दा'' नहीं कर रही थीं और अपनी बात बहुत अच्छी तरह समझा रही थीं। दूसरे शब्दों में वे बहुत निःसंकोच थीं और उनके आसपास और विश्वभर में जो कुछ भी हो रहा है उसकी उन्हें जानकारी थी। इसीलिए वे अपने आपको बेहतर बनाना और जीवन में अपनी स्थिति सुधारना चाहती थीं। यह सकारात्मक दृष्टिकोण उन्हें कार्यात्मक साक्षरता के माध्यम से अपने आपको ऊपर उठाने के लिए उनके प्रयास में बहुत सहायक हो सकता है।

जौनसार की दूरवर्ती पहाड़ियां

देहरादून जिले के कालसी ब्लाक में जौनसार आदिवासी क्षेत्र पहाड़ी क्षेत्र है जहां पहुंचना इतना आसान नहीं है। जौनसार आदिवासी लोग इन दूरवर्ती पहाड़ियों में अलग थलग और एकांत में रहते हैं और अपनी प्रथाओं और परंपराओं के अनुसार चल रहे हैं।

जन संचार और कंप्यूटर के इस युग में भी जौनसार की पहाड़ियां उसके लिए अभी तक दूरवर्ती हैं जो वहां जाना चाहता है।

पहाडी के शिखर पर बसे अथेल गांव, जो समुद्रतल से लगभग 6000 फुट ऊंचा है, से सड़क की दूरी आठ किलोमीटर है। इस दूरी को पहाड़ी रास्ते पर पैदल चलकर ही पार करना पड़ता है। यह पहाड़ी रास्ता खड़ी चढ़ाई की अपेक्षा फिसलन भरा अधिक है।

गांववासियों के लिए निकटतम स्वास्थ्य सुविधा कोई 10 किलोमीटर दूरी पर उपलब्ध है। निकटतम पुलिस स्टेशन, डाकघर, मार्किट या बैंक भी बहुत दूर है।

यहां बिजली नहीं है। बहुत दूर एक मिडल स्कूल को छोड़कर शिक्षा की कोई सुविधाएं नहीं हैं। गरमी के महीनों में पीने का पानी दुर्लभ हो जाता है। यही कारण है कि लोग अलग थलग, एकांत और दूर रह गए।

इस क्षेत्र में ऐसे ही लगभग सौ गांव हैं। किंतु प्रौढ़ शिक्षा उन तक पहुंच गई है जहां डाकिया भी जाते हुए डरता है। इसका श्रेय ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम देहरादून के सक्रिय साक्षरता कार्यकर्ताओं को जाता है। इन दूरवर्ती पहाड़ियों में साठ प्रौढ़ शिक्षा केंद्र कार्य कर रहे हैं।

कोई भी सरकारी कर्मचारी इन गांवों में कभी नहीं आता क्योंकि ये जीवन की मुख्यधारा से कंटे हुए हैं। कोई भी व्यक्ति इतना कष्ट नहीं उठाना चाहता कि पहले तो वह कई किलोमीटर पैदल चलकर खड़ी चढ़ाई चढ़कर जाए और फिर सीधी ढलानें पैदल उतरे।

किंतु ज्यों ज्यों आप पहाड़ के घुमावदार रास्ते पर चढ़ाई चढ़ते जाते हैं त्यों त्यों आपको समूचे वातावरण की सुंदरता, स्वच्छता और पवित्रता देखने का लाभ मिल जाता है हालांकि इनमें से अधिकांश पहाड़ियां नंगी हैं क्योंकि उनके वृक्षों की अंधाधुंध कटाई हो गई है और खनिज संपत्ति का समुचित उपयोग किया गया है।

जौनसारी लोगों का अपना ही जीवन है। उनका रहन सहन उनके वातावरण के अनुकूल है। उनके घर पक्की लकड़ी के बने होते हैं और उनकी छते वहीं उपलब्ध होने वाली स्लेट शैलों से बनाई जाती हैं ताकि वे कड़ाके की सर्दी और बर्फ को सह सकें। वे पहाड़ी ढलानों पर खेती करते हैं और दुधारू पशु पालते हैं। बकरी पालने का काम फल फूल रहा है।

यद्यपि इन दूरवर्ती पहाड़ियों में कई आधुनिक वैज्ञानिक और तकनोलाजी से संबंधित प्रगति लाई जा सकती है तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने भी ऐसी संभावनाओं पर विचार नहीं किया।

उदाहरण के लिए यहां प्रकाश और ईंधन की समस्या है। सौर ऊर्जा का भरपूर उपयोग किया जा सकता है क्योंकि यहां दिन में तेज धूप होती है। यदि किसी कारणवश यह संभव नहीं है तो आसानी से उठाए जा सकने वाले छोटे जनरेटिंग सेट लाए जा सकते हैं। गोबर गैस प्लांट लगाने पर भी विचार किया जा सकता

है जिसमें स्थानीय जरूरतों और स्थितियों के अनुकूल थोड़ा बहुत परिवर्तन किया जा सकता है पीने के पानी की कुछ व्यवस्था तो है किंतु यह काफी नहीं है। गरमी के महीने में पीने का पानी लेने के लिए महिलाओं को मीलों चलना पड़ता है। छोटी मोटी सिंचाई योजनाओं पर विचार किया जा सकता है। वर्षा का पानी नीचे नदी की ओर बह जाता है। इसमें से थोड़ा पानी पहाड़ी जलाशयों में उपयोगी ढंग से जमा किया जा सकता है और इसे पीने और सिंचाई के काम में लाया जा सकता है।

वन संपत्ति इतनी अधिक नहीं है। समूची पहाड़ियों पर अधिक पेड़ लगाएं जाएं तो उसका रूप बदला जा सकता है।

जीप चलने योग्य छोटी सड़कें गांववासियों की मदद से बनाई जा सकती हैं क्योंकि उनमें से अधिकांश लोग बेरोज़गार हैं।

जब तक इन दूरवर्ती पहाड़ियों में बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध नहीं करवाई जातीं तब तक इन गांवों में – इनमें रहने वाले लोगों और उनके बच्चों में स्पष्ट प्रगति संभव नहीं है। इस दिशा में विशेष प्रयासों की जरूरत है।

यह खुशी की बात है कि अथेल गांव ने साक्षरता को बड़े पैमाने पर शुरू किया है। इसकी प्रेरणा अनुदेशक मोहन सिंह से मिली है जो युवा और कर्मठ व्यक्ति हैं और इसी गांव के हैं।

गांव के सभी युवक उनके शिक्षार्थी हैं। उनमें से कुछ फिर से निरक्षरता की स्थिति में पहुंच गए हैं हालांकि वे तीसरी या चौथी कक्षा तक स्कूल में पढ़े हैं।

महिलाएं अभी तक साक्षरता की कक्षाओं में नहीं आईं। केवल महिलाओं के लिए भी केंद्र खोलने के प्रयास किए जा रहे हैं। किंतु कठिनाई तो उपयुक्त अनुदेशक ढूंढने की है।

इन दूरवर्ती पहाड़ियों में प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों के खुल जाने से प्रगति का मार्ग खुल गया है। लोग "पांडव प्रथा" (बहुपति-प्रथा) और ऐसे ही दूसरे रिवाजों को नहीं मानते। यह बड़ी उपलब्धि है।

इन दूरवर्ती पहाड़ियों में प्रौढ़ शिक्षा प्रयास हमारे भरपूर प्रोत्साहन और सम्मान का हकदार है। आशा है कि अधिकारी शीघ्र ही इन लोगों को बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने के लिए विशेष प्रयास करेंगे।

शायद वह दिन दूर नहीं है जब इन पहाड़ियों को रस्सी मार्ग (रोप वे) और हैलीपैड से जोड़ दिया जाएगा ताकि समुदाय के इन वंचित वर्गों की प्रगति और संपन्नता का नया युग शुरू हो सके।

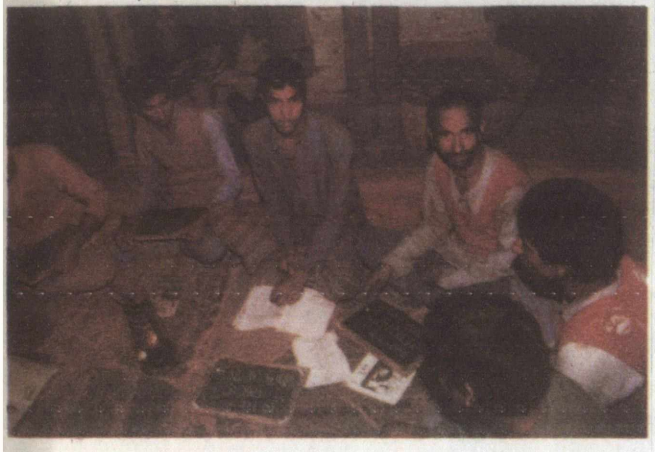

गंजा गांव में चरखा केंद्र

गंजा गांव दो पहाड़ों की ढलानों के बीच बसा बहुत सुंदर गांव है जिसमें ताजा पानी, ताजा फल और सब्जियां हैं। यहां के लोग स्वस्थ और सजीव हैं। नैनीताल जिले के भीमताल ब्लाक की इन हरीभरी पहाड़ियों में सभी जातियों और नसलों के लगभग 300 परिवार रहते हैं।

प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में महिलाओं के प्रवेश के लिए प्रेरणा का स्रोत चरखा प्रशिक्षण की सुविधाएं थीं जो स्थानीय खादी ग्रामोद्योग द्वारा प्रदान की गई थीं। यह प्रशिक्षण तीन महीने के लिए था और प्रौढ़ शिक्षार्थी इस अवधि में नियमित रूप से आते रहे। उसके बाद प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में उनकी रुचि कम होनी शुरू हो गई।

अनुदेशिका कुमारी दीपा वोरा कहती हैं कि शिक्षार्थियों ने चरखे पर कातना पुरी तरह सीख लिया है और वे अपने फालतू समय में काम करके अपनी जीविका कमा सकती हैं। अब वे सब अपने चरखों की प्रतीक्षा कर रही हैं जिनके लिए उन्होंने अपने आवेदन पत्र भी भेज दिए हैं और ऋण आदि को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

इस गांव में ऐसे शिक्षार्थी हैं जिनकी पृष्ठभूमि और जरूरतें भिन्न भिन्न हैं। एक शिक्षार्थी विधवा है और जरूरत के कारण अपने परिवार को पालने के लिए उसे कमाना पड़ता है। दूसरी हाल ही में विवाही "बहू" है जो दूसरे गांव से आई है। उसका पति साक्षर है और वह उसे शीघ्र ही साक्षर बनाना चाहता है।

इस प्रकार साक्षरता की कहानी भिन्न भिन्न व्यक्तियों के लिए भिन्न भिन्न हैं यद्यपि इसका लक्ष्य लोगों को साक्षर बनाना है। हम साक्षरता कार्यकर्ताओं को यह बात जाननी है कि किस को किस चीज की जरूरत है और क्यों और उन जरूरतों और मांगों को कैसे पूरा किया जाए इस बारे में सोचना है और उसके अनुसार शिक्षार्थियों को साक्षरता प्रदान करने की व्यवस्था करनी है।

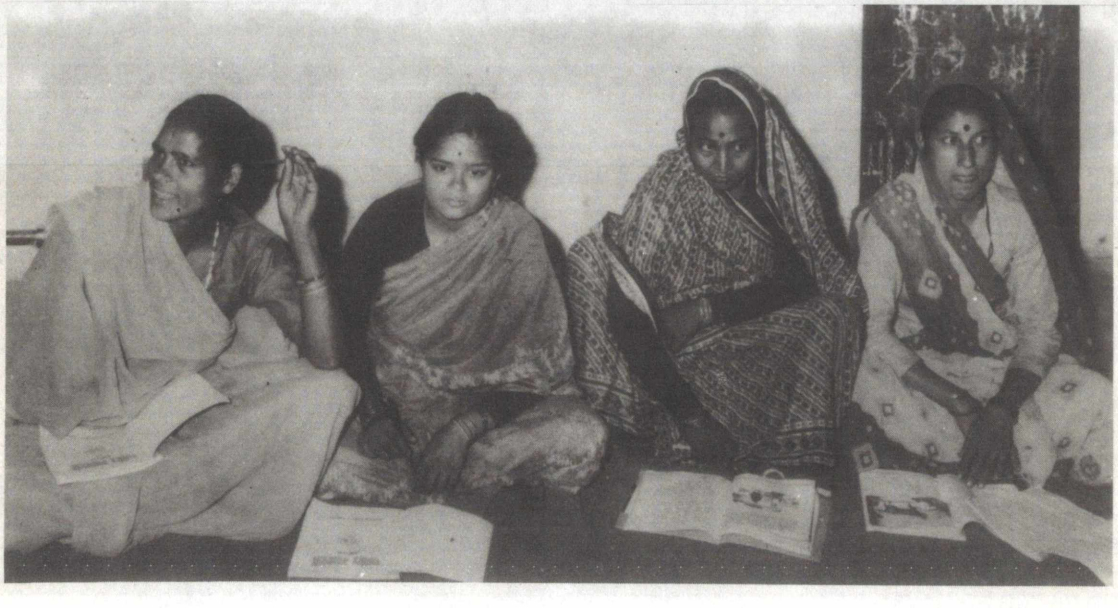

युक्ती मंडल, रानी बाग

नवसक्षर महिलाएं क्या कर सकती हैं, अपने आपको वे कैसे संगठित कर सकती हैं और ऐसे काम किस प्रकार कर सकती हैं जो वभी पुरुषों का ही एकाधिकार समझे जाते थे, वे अपना फालतू समय कैसे उपयोगी और सार्थक रूप से खर्च कर सकती हैं, आदि बातें युवती मंडल में देखी जा सकती हैं।

यह संगठन कुछ भूतपूर्व प्रौढ़ शिक्षार्थियों के गहन प्रयासों से लगभग तीन वर्ष पहले बना था। यह आज पंजीकृत निकाय है और 15 से भी अधिक महिलाएं निकटवर्ती एच एम टी घड़ी कारखाने के लिए नियमित काम में जुटी हुई हैं। उन्हें ठेके के आधार पर मज़दूरी दी जाती है।

उनमें से कुछ ने वजीफे आदि के साथ तीन महीने कारखाने में उन कामों का प्रशिक्षण लिया था जो उन्हें करने थे। उन्होंने प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में जो कुछ सीखा था उससे उन्हें इन कामों में बहुत मदद मिली। यह बात श्रीमती चंद्रवती ने बताई जो इस संगठन के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं। यदि वे साक्षर न बन गई होतीं तो एच एम टी में प्रशिक्षण के लिए उनका चुना जाना संभव न होता।

एच एम टी ने इस संगठन को मेज और कुर्सियों तथा दूसरी सुविधाएं भी प्रदान की हैं। मंडल के पास काम करने के दो कमरे हैं और महिलाएं अपने फालतू समय में काम करती हैं। वे जो काम करती हैं उनमें बड़ी सावधानी और गति की जरूरत होती है। काम समय पर पूरा करके कारखाने को लौटाना होता है। महिलाएं अपने किए गए काम के अनुसार 150/- रुपए से लेकर 350/- रुपए तक कमा लेती हैं। उनमें से कुछ को अधिकतम पैसा कमाने के लिए हर रोज लंबे समय तक काम करना पड़ता है।

एच एम टी ने इस क्षेत्र में महिलाओं को काम दिया है जिनमें से कई नवसक्षर या प्रौढ़ शिक्षार्थी हैं। निस्संदेह ये काम मशीनी प्रकार के हैं– एक ही क्रिया बार बार दोहरानी पड़ती है। महिलाओं में स्वभाव से ही इस काम के लिए बहुत धैर्य और कौशल होता है। उन्हें अपनी साधारण आंखों का प्रयोग करना पड़ता है हालांकि कारखाने वालों ने उन्हें माइक्रोस्कोप भी दिया हुआ है।

युवती मंडल अब महसूस करता है कि उन्हें जो मज़दूरी दी जाती है वह एच एम टी द्वारा अपने कारखाने के नियमित कर्मचारियों को दी जानी वाली मज़दूरी से कम है। अब वह सामूहिक सौदाकारी द्वारा अधिक मज़दूरी लेने के लिए प्रयास कर रहा है।

प्रौढ़ शिक्षा केंद्र इस स्थान में अभी भी चालू है। यहां की और भी निरक्षर महिलाएं युवती मंडल द्वारा उपलब्ध कराई जा रही साक्षरता कक्षाओं और काम के अवसरों का लाभ उठा रही हैं।

इस क्षेत्र की महिलाओं को इस अनुभव से आत्मविश्वास मिला है और अपनी सहायता स्वयं करके वे प्रगति और संपन्नता की राह पर हैं।

तराई गांव साक्षरता की ओर

लखनपुर नैनीताल जिले के हलद्वानी ब्लॉक में एक छोटा सा गांव है। यह गोला नदी के उस पार है और इसलिए इसे ''गोलापार'' कहते हैं जैसा कि हमारे यहां दिल्ली में ''जमनापार'' है। यह गांव उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में आता है जो अपनी हरियाली और फसलों के लिए प्रसिद्ध है।

यहां एक महिला प्रौढ़ शिक्षा केंद्र पिछले कुछ महीनों से खुला है। अधिकांश प्रौढ़ शिक्षार्थी कृषि मज़दूर हैं। यह केंद्र अनुदेशिका कु तारा संबल के अभीअभी बने बड़े मकान में खुला है।

जो बात ध्यान देने योग्य है वह यह है कि यह केंद्र इस संपन्न गांव से निरक्षरता समाप्त करने का पहला कदम है।

बिंदु काठा की कहानी

बिंदु काठा की कहानी उन हजारों भूमिहर मज़दूरों और दूसरे लोगों की कहानी है जो लगभग 10-15 वर्ष पहले पिथौरागढ़, अल्मोड़ा और उत्तर प्रदेश के ऐसे ही दूसरे स्थानों के भीतरी क्षेत्रों से आकर तराई में बस गए थे। उन्होंने वन की भूमि पर कब्जा कर लिया, जंगल साफ कर दिए और खेतीबाड़ी शुरू कर दी। आज भी खेतों और घरों के पिछवाड़ों में बड़ी बड़ी जड़ें दिखाई देती हैं जो बीते हुए दिनों की याद दिलाती हैं। पहाड़ियों से आए इन नए वासियों को वन विभाग के आक्रोश के अलावा बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सड़कों के बिना, बिजली या पानी की सुविधाओं के बिना इन लोगों ने सभी कठिनाइयों के विरूद्ध जीवन और मरण का संग्राम छेड़ दिया।

जिंदा रहने की जरूरत मात्र ने इन्हें संघर्ष करना सीखा दिया। कई लोगों के परिवार मलेरिया और दूसरे रोगों से समाप्त हो गए। कई इस ''नरक की जगह'' को छोड़ गए। किंतु जो लोग रह गए और जिन्होंने कठिन परिश्रम किया उन्हें इसका फल मिल गया। उनकी सफलता उनके चेहरों से झलकती है। किंतु उन लोगों के अनुसार संघर्ष अभी भी जारी है और 40-45 किलोमीटर से भी अधिक क्षेत्र में फैली 45,000 से भी अधिक पुरुषों और महिलाओं की जनसंख्या को बुनियादी सुविधाएं दिलाने के लिए संघर्ष जारी रहेगा।

इन लोगों ने अपनी झोंपड़ियां बना ली हैं और मेल मिलाप से रहते हैं। इन्होंने अपनी संस्कृति और परंपराओं को बनाए रखा है। किंतु उनमें से अधिकांश निरक्षर हैं और वे अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के समुदायों के हैं।

बिंदु काठा में खेड़ा एक ऐसा गांव है जहां प्रौढ़ शिक्षा सक्रिय है। लोगों ने साक्षरता को अपनाया है क्योंकि वहां कोई स्कूल या दूसरी शैक्षिक सुविधा नहीं है। इस क्षेत्र में 29 प्रौढ़ शिक्षा केंद्र हैं जिन्हें ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम, हलद्वानी चलाता है। इनमें से अधिकांश महिला केंद्र हैं।

नेहरू युवा केंद्र की मदद से उन्होंने खेड़ा गांव में सिलाई केंद्र शुरू कर दिया है। स्थानीय युवकों, ने भी एक संगठन बना लिया है। जिसका नाम ''नेहरु युवा संगठन'' है। इस सिलाई केंद्र में लगभग 30 महिला शिक्षार्थी भर्ती की गई हैं।

बिंदु काठा में पर्यवेक्षक और अनुदेशक बड़े मेहनती हैं और हमेशा साक्षरता को बढ़ावा देने के तरीकों की खोज करते रहते हैं ऐसी एक अनुदेशिका हैं रेखा रावत, एक और अच्छी गायिका हैं। उन्होंने कई गीत बनाए हैं और गांव गांव में जाकर उन गीतों को गाकर इन लोगों के परिवारों को प्रेरणा प्रदान करती हैं ताकि वे प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में पढ़ने आएं।

बिंदु काठा के लोग परिवार की भांति सदभाव से रहते हैं और एक दूसरे की मदद करते हैं। ''एक सबके लिए और सब एक के लिए'' की भावना सबमें व्याप्त लगती है क्योंकि साझे दुश्मन-व्यवस्था से युद्ध करने की लिए वे सब उद्यत हैं। साक्षरता उनके अधिकारों की लड़ाई जीतने के लिए उनका जानदार साधन बन गई है।

बिंदु काठा की कहानी संभवतः कभी न समाप्त होने वाली मुसीबतों और दुःख तकलीफों, आंसुओं और कठिन परिश्रम, किंतु अंततः जीत की कहानी है। यह वास्तव में उजड़े हुए लोगों की, मानव विपत्ति और मानव दुर्दशा की, किंतु बेहतर जीवन के लिए आकांक्षाओं की भी कहानी है। यह उस मनुष्य की शाश्वत कहानी का भी हिस्सा है जो हरीभरी चरागाहों की खोज में है ताकि वह खुशियों भरा जीवन व्यतीत कर सके।

बिंदु काठा की कहानी और वहां हो रहा साक्षरता प्रयास हम सबको रोचक लगेगा।

विकलांग लड़की इच्छाशक्ति और हिम्मत दिखाती है

खेड़ा गांव में हमें एक विकलांग लड़की – 15 वर्षीय कुमारी हीरा जग्गी मिली। उसका बचपन में ही आग-दुर्घटना में एक बाजू नकारा हो गया था।

वह अब प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में पढ़ रही है और पढ़ तथा लिख सकती है। उसने एक ही हाथ से चटाई बनाने की कला भी सीख ली है और इस प्रकार वह कुछ पैसा कमा लेती है।

प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में सभी लोग उसकी इच्छाशक्ति और हिम्मत की भरपूर प्रशंसा करते हैं और उसे और भी सिखाने के लिए विशेष ध्यान देते हैं।

कुमारी जग्गी से मिलकर और उसके जीवन और आकांक्षाओं के बारे में जानकर बहुत खुशी हुई।

गाड़ी खास के माचिस की तीलियां पैक करने वाले

रायबरेली कस्बे से लगभग 5 किलोमीटर दूर स्थित गाड़ी खास एक पिछड़ा हुआ गांव है। ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम यहां महिला केंद्र चलाता है। इसको चलते यह दूसरा वर्ष है। उन्होंने साक्षरता गतिविधि को आमदनी पैदा करने से जोड़ दिया है।

एक स्वयंसेवी संस्था राणा बेणी माधव जन कल्याण समिति ने इस गांव में माचिस बनाने का केंद्र खोला हुआ है। वे महिला शिक्षार्थियों को बनी बनाई माचिस की तीलियां माचिस की डिब्बियों में भरने का काम देते हैं यह पैकिंग का काम हाथ से किया जाता है।

चूंकि यह काम प्रौढ़ शिक्षार्थी कर रहे हैं, इसलिए निर्माण केंद्र ने प्रौढ़ शिक्षा के चिह्न वाले लेबल भी तैयार किए हैं जो माचिस की डिब्बियों पर चिपकाए जाते हैं। इससे दो उद्देश्य पूरे हो जाते हैं –

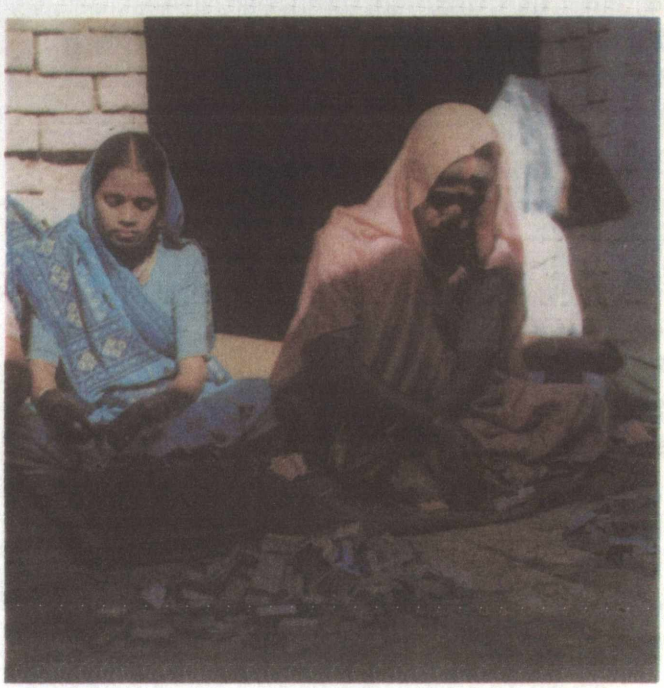

झारवरासी में बहूद्देशीय केंद्र

एक तो शिक्षार्थियों को प्रेरणा देने का और दूसरा कार्यक्रम का प्रचार करने का।

इस श्रम साध्य कार्य के माध्यम से गांव की महिलाएं जितना काम करती हैं उसके आधार पर 10 रुपए से लेकर 15 रुपए प्रतिदिन कमा लेती हैं।

इस केंद्र में कमाने और सीखने का अवसर मिलता है और चूंकि यह निर्माण केंद्र के ही कमरों में से एक कमरे में है, इसलिए इसमें उपस्थिति भी कुल मिला कर नियमित है। प्रौढ़ शिक्षा केंद्र काफी सक्रिय और जीवंत भी है। महिलाओं ने साक्षरता को कार्यात्मकता से जोड़ने की जरूरत समझ ली है।

ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम ऐसे ही और केंद्र विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में खोलने की कोशिश कर रहा है।

झारवरासी राय बरेली जिले के राही विकासखंड में हराभरा गांव है जिसमें बड़े बड़े वृक्ष हैं। यहां ग्रामीण कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम ने महिलाओं के लिए ब्लाक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का पूरा लाभ उठाया है। इनमें जिन कार्यों का प्रशिक्षण शामिल है वे इस प्रकार हैं: वहीं पर मिलने वाले कच्चे माल से "वाण" मशीन का प्रयोग करते हुए रस्सी बनाना, माचिस बनाना, घास की टोकरियां बनाना, हाथ के पंखे बनाना, आदि।

प्रौढ़ शिक्षार्थी इस केंद्र में साक्षरता की कक्षाओं में आते हैं और पढ़ना, लिखना और हिसाब लगाना सीखते हैं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी भाग लेते हैं। यह केंद्र बड़े पंचायत घर में है। प्रशिक्षण अवधि के दौरान ब्लाक वजीफा और दूसरी सुविधाएं देता है।

शिक्षार्थी पूरी तरह प्रेरित हैं और प्रौढ़ शिक्षा केंद्र काफी सक्रिय और जीवंत है। यह संभव न हो पाता यदि इसे कार्यात्मक कार्यक्रमों से न जोड़ा गया होता।

राणा बेणी माधव जन कल्याण समिति, राय बरेली

यह एक स्वयंसेवी संस्था है जो मुख्यतया प्रौढ़ शिक्षा और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में कार्य करती है। यह समिति 1990 में एक खैराती संस्था के रूप में बनाई गई थी।

छोटी मोटी शुरूआत से आज यह संस्था पूर्ण विकसित प्रशिक्षण व निर्माण एकक बन गई है जो रायबरेली में और इसके आसपास कई प्रकार के सामाजिक सांस्कृतिक और विकास कार्यों में लगी हुई है। यह समेकित बाल विकास योजना (ICDS) कार्यक्रम के अंतर्गत आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देती हैं, केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड (CSWB) के लिए क्रेच चलाती हैं, ग्रामीण क्षेत्रों में महिला और बाल विकास (DWACRA) के अंतर्गत माचिसें, आदि बनाने का काम करती हैं।

उसने 30 प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों के साथ 1983-84 में प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम लागू करना शुरू किया। उसने 1985-86 में 100 प्रौढ़ शिक्षा केंद्र चलाए और उसके बाद 1986-87 में 300 प्रौढ़ शिक्षा केंद्र चलाए। इस समय वह रायबरेली जिले के डलमऊ ब्लाक में 100 प्रौढ़ शिक्षा केंद्र लागू कर रही है, जो बहुत पिछड़ा हुआ है विशेषकर महिला साक्षरता में।

भीरा गोविंदपुर इस ब्लाक में एक विशिष्ट गांव है जहां महिलाओं के लिए दो प्रौढ़ शिक्षा केंद्र खुले हुए हैं। समिति द्वारा किए गए सर्वेक्षण के अनुसार कुल 4,651 में से 2,300 लोग निरक्षर हैं जो 15-35 आयु वर्ग के हैं और लगभग 1,100 महिलाएं हैं। इनमें से अधिकांश लोग अनुसूचित जातियों और पिछड़े वर्गों के हैं।

इस गांव में आंगनवाड़ी और प्रौढ़ शिक्षा केंद्र को मिला दिया गया है और अनुदेशक सुबह से शाम तक काम में पूरी तरह लगे रहते हैं। उन्हें दोनों योजनाओं से पारिश्रमिक मिलता है।

समिति के पास युवा और दृढ़प्रतिज्ञ कार्यकर्ताओं की अच्छी टीम है और इसके सचिव श्री बी. शुक्ला बहुत सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता और साक्षरता कार्यकर्ता हैं।

दुमारिया के गलीचा बुनकर

दुमारिया मिर्ज़ापुर ज़िले में रोबर्ट्सगंज से कोई 30 किलोमीटर दूर एक शांत गांव है। यहां कई आदिवासी और अनुसूचित जातियों के लोग रहते हैं जैसे डोंगर, चेरो, मुसहर, दासर, हरिजन आदि। सबसे निकट सड़क बिंदु रामगढ़ है जो आठ किलोमीटर की दूरी पर है। इसलिए इस गांव में कोई बस नहीं आती। यह करमनासा नहर के उस पार है। करमनासा नदी का पानी नागुवा बांध में जमा किया जाता है जो 1918 में बनाया गया था और इसका उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता है। धान मुख्य फसल है। यद्यपि बांध और सड़क के किनारे बिजली है किंतु इस क्षेत्र के घरों को अभी तक बिजली नहीं दी गई है।

कुछ डोंगर और दूसरे आदिवासी लोग कालीन बुनने का काम करते हैं। उन्हें कच्चा माल और मजूरी निर्माता फर्में देती हैं। 10'x12' के आकार के कालीन के लिए 5000 रुपए के करीब मजूरी दी जाती है। चार या पांच लोगों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर के रंग और रूप वाला अच्छा कालीन बनाने में कई महीने लग जाते हैं। इसमें समय तो बहुत लगता ही है, इसके अलावा यह थका देने वाला काम भी है। इस प्रकार के काम में बच्चे प्रतिदिन कई घंटे लगे रहते हैं। उन्हें स्कूल जाने का समय भी नहीं मिलता। अंत में जब कालीन महीनों श्रम करने के बाद तैयार हो जाता है तो निर्माता फर्म उनकी मजदूरी इस आधार पर घटा देती है कि माल विशेष विवरण के अनुसार तैयार नहीं किया गया है, उसमें यह गलती की गई है या वह गलती है आदि और गांव वालों को केवल 3000/- रुपए के करीब ही मिलते हैं। इस प्रकार का शोषण जारी रहता है। ये लोग अब यह सब जान गए हैं और इसके बारे में बोलते हैं। किंतु वे यह भी मानते हैं कि चूंकि कोई दूसरे रोजगार के मौके इस क्षेत्र में नहीं हैं, इसलिए उन्हें मज़बूर होकर अपने जिंदा रहने की जरूरतों के लिए कालीन बुनने का काम करना पड़ता है।

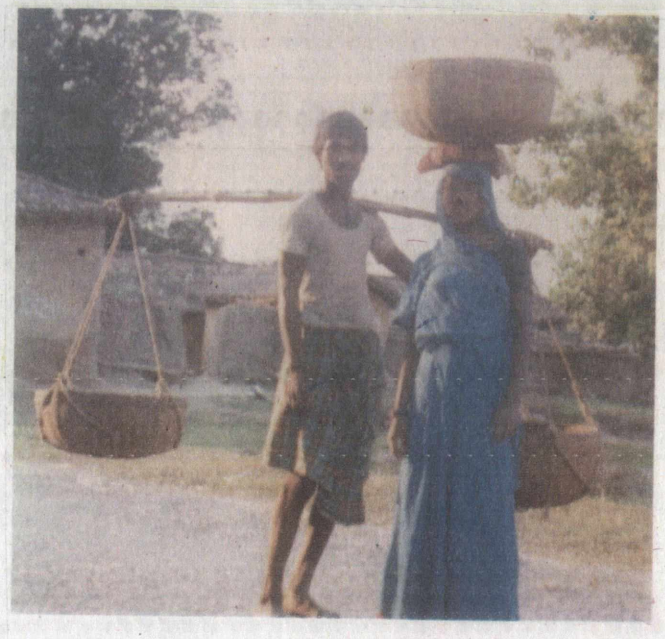

जहां इस क्षेत्र के दुमारिया और दूसरे गांव में बने कालीनों से देश को कितनी ही विदेशी मुद्रा मिलती है और निर्यात करने वाली फर्में

इससे कितना ही लाभ कमाती हैं, वहां गरीब कालीन बुनकर अभी भी गरीबी और निरक्षरता में नष्ट हो रहे हैं। जीवन में उनकी दुर्दशा के बारे में सुनने की अपेक्षा देखकर ही सही अनुमान लगाया जा सकता है। यह इतनी हृदयविदारक है कि कुछ शब्दों में इसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

इन गांवों में निरक्षरता फैली हुई है। अंबेडकर समाज सेवा मंडल, जो एक स्वयंसेवी संस्था है, ने हाल ही में उनके लाभ के लिए प्रौढ़ केंद्र शुरू किए हैं। ऐसे छह केंद्र इस क्षेत्र में खोले गए हैं। साक्षरता प्रयास के कुछ परिणाम निकलने शुरू हो गए हैं। इसने लोगों में उनके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में कुछ जागरूकता पैदा कर दी है।

दुमारिया और दूसरे गांवों में सभी घर साफ सुथरे हैं, उनकी छतों पर टाइलें लगी हैं और मिट्टी की दीवारें गोबर से पुती हुई हैं। उनमें से कुछ लोग समीप के खेतों में कृषि मजदूरों का काम भी करते हैं।

समाज ने इन गांवों में दीवारों पर प्रौढ़ शिक्षा का चित्र और नारे लिखकर प्रचार अभियान छेड़ दिया है। उसने वचन दिया है कि वह आने वाले महीनों में साक्षरता में सुधार लाने के गहन उपाय करेगा। आइए आशा करें कि दुमारिया के कार्लान बुनकरों को इन प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों से सचमुच लाभ हो।

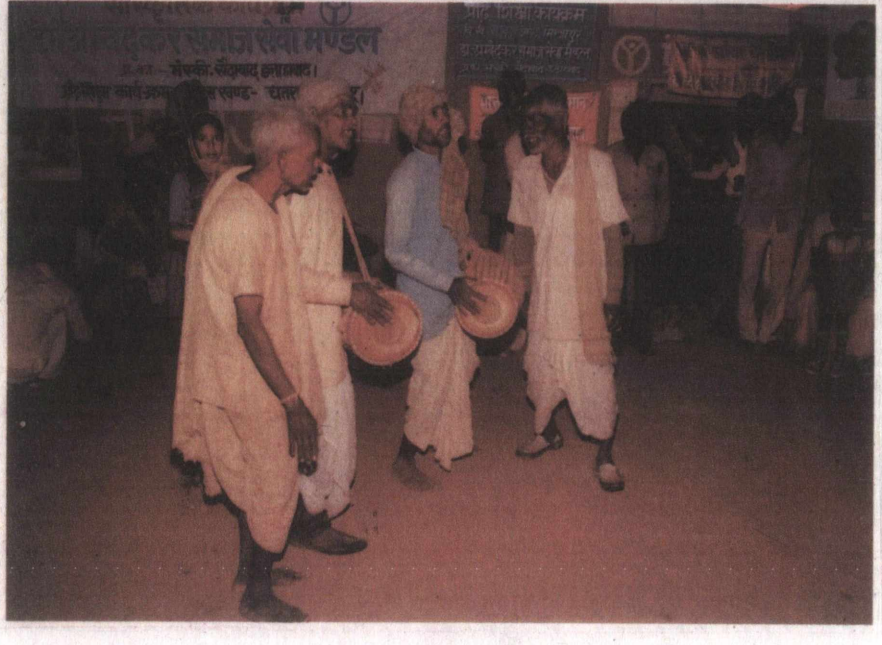

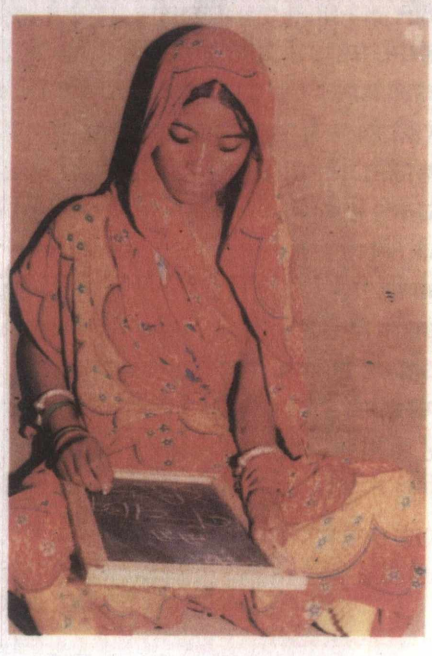

আমরা সবাই এই ঘরে

सोए हुए गांव साक्षरता के लिए जाग उठे

फसलें कट चुकी हैं। खेत खाली पड़े हैं। समूचे ग्रामीण क्षेत्र में शीतकालीन ठिठुरन वायुमंडल में व्याप्त है और धूमिल कुहासा छाया हुआ है। इस प्रकार ग्रामीण बंगाल नींद में डूबा लगता है। सूर्य भी जल्दी अस्त हो जाता है और चूंकि वहां बिजली नहीं है, इसलिए सामान्यतया कई संथाल आदिवासी गांव भी शाम को गहरी नींद में सो जाते हैं।

किंतु ये नींद में डूबे गांव इन दिनों जाग उठे हैं। किसलिए? ऐसा लगता है कि इन्होंने साक्षरता की जरूरत जान ली है। इन्होंने यह समझ लिया है कि साक्षरता उन्हें अपने जीवन बेहतर बनाने में और उनके बच्चों का उज्जवल भविष्य सुनिश्चित करने में कैसे मदद कर सकती है।

यदि यह ऐसा है तो हम सबको खुशी होनी चाहिए। आदिवासी लोग साक्षरता के लिए तैयार हैं, इस काम में समूचे समुदाय और साक्षरता कार्यकर्ताओं का पूरा पूरा सहयोग मिलना चाहिए।

यह कार्यक्रम इनमें से कुछ गांवों में इसी वर्ष पहली बार शुरू हुआ है। गांव वालों की उमंग और ललक केवल आंशिक रूप से ही पूरी की गई है। इनमें से बहुत से आदिवासी गांवों में और भी प्रौढ़ शिक्षा केंद्र खोलने की जरूरत है क्योंकि उनमें से अधिकांश गांव निरक्षरता में डूबे हुए हैं। बहुत ही कम ऐसी महिलाएं हैं जिन्हें पढ़ना या लिखना आता है। आदिवासी समुदायों में महिलाएं बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वस्तुतः परिवार के और बाहर के दोनों ही प्रकार के सभी कार्य वे करती हैं। वे बच्चों की देखभाल करती हैं, खेतों में काम करती हैं, बाजारों में जाती हैं और पुरुषों की अपेक्षा उनकी जिम्मेदारियां अधिक हैं। इसलिए यह तो और भी जरूरी है कि उन्हें शीघ्र साक्षर बनाया जाए।

साक्षर हो जाने से वे अपने लोगों के मामलों में कहीं अधिक निर्णायक भूमिका निभा सकती हैं और अपना तथा दूसरों का स्तर ऊपर उठा सकती हैं।

महान रबीन्द्रनाथ टैगौर के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर ने 1863 में बोलपुर में शांति निकेतन की स्थापना की थी। विश्वभारती की स्थापना 1921 में हुई।

बोलपुर में स्थित विश्वभारती विश्वविद्यालय भा बोलपुर ब्लाक में ग्रामीण साक्षरता कार्यक्रम चला रहा है। इसे छोड़कर राज्य द्वारा चलाई जा रही परियोजनाओं के अलावा दूसरा कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है।

रबीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार ग्रामीण जीवन की मुख्य कमियों में से एक थी शिक्षा की कमी। वह भी जानते थे कि उस समय की शिक्षा प्रणाली, जो अधिकांशतः उच्च वर्गों के लिए थी, दोषपूर्ण थी। इसका मुख्य दोष यह था कि यह निचले स्तर पर रचनात्मक कार्य और जीवन से बिल्कुल कटी हुई थी।

टैगोर के शैक्षिक दर्शन के प्रमुख उद्देश्यों में से एक था शिक्षार्थी में जिज्ञासा की भावना को बढ़ावा देना जिससे वह मनुष्यों में मनुष्य होने के नाते और अपनी चारों ओर की प्रकृति से जुड़ा होने के नाते प्रश्न पूछ सके।

ग्रामीण क्षेत्रों में आम आदमी को शिक्षा की कोई चाह नहीं थी क्योंकि यह उसके लिए न तो उपयोगी थी और न ही व्यावहारिक थी।

यहां तक कि आज भी टैगोर की धरती निरक्षरता में डूबी हुई है। श्रीनिकेतन और दूसरों के प्रयासों का क्षेत्र और उद्देश्य सीमित हैं। यदि और जब तक जन प्रयास संभव नहीं हो जाता तब तक निरक्षरता मिटाना दूर का सपना बना रहेगा।

बीरभूम और मिदनापुर दोनों ही जिलों के कुछ आदिवासी गांवों में साक्षरता का जो प्रयास हुआ है उसकी झलक आगे दी गई है।

संथाल गांव साक्षरता की राह पर

वागवन खाइरासोल ब्लाक में एक संथाल गांव है। यह कई प्रकार से पिछड़ा हुआ गांव है। इसमें बिजली नहीं है। पर्याप्त सड़कें भी नहीं हैं। एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और एक स्कूल है जो गांव से दूर है। इसकी जनसंख्या लगभग 5,000 है। गांव वाले मुख्यतया कृषि से ही अपना गुजारा करते हैं। फिर भी उनमें से अधिकांश भूमिहीन मजदूर हैं। किंतु उनके घर साफ सुथरे हैं और आस पास का वातावरण भी साफ सुथरा है।

राज्य परियोजना के अंतर्गत पुरुषों के लिए एक प्रौढ़ शिक्षा केंद्र 1984-85 से लेकर पिछले चार वर्षों से लगातार इस गांव में चल रहा है। उन्होंने लगभग 100 पुरुषों को साक्षरता प्रदान की है और महिलाओं के लिए भी अभी तक कोई केंद्र नहीं खोला गया है। परियोजना अधिकारी को आशा है कि अगले दो वर्षों की अवधि में इस गांव में सभी प्रौढ़ निरक्षरों को साक्षर बना दिया जाएगा।

रासमाय मुर्मु सक्रिय अनुदेशक हैं। वह नौवीं कक्षा तक पढ़े हैं और इस गांव में पिछले चार वर्षों से अनुदेशक के रूप में काम कर रहे हैं।

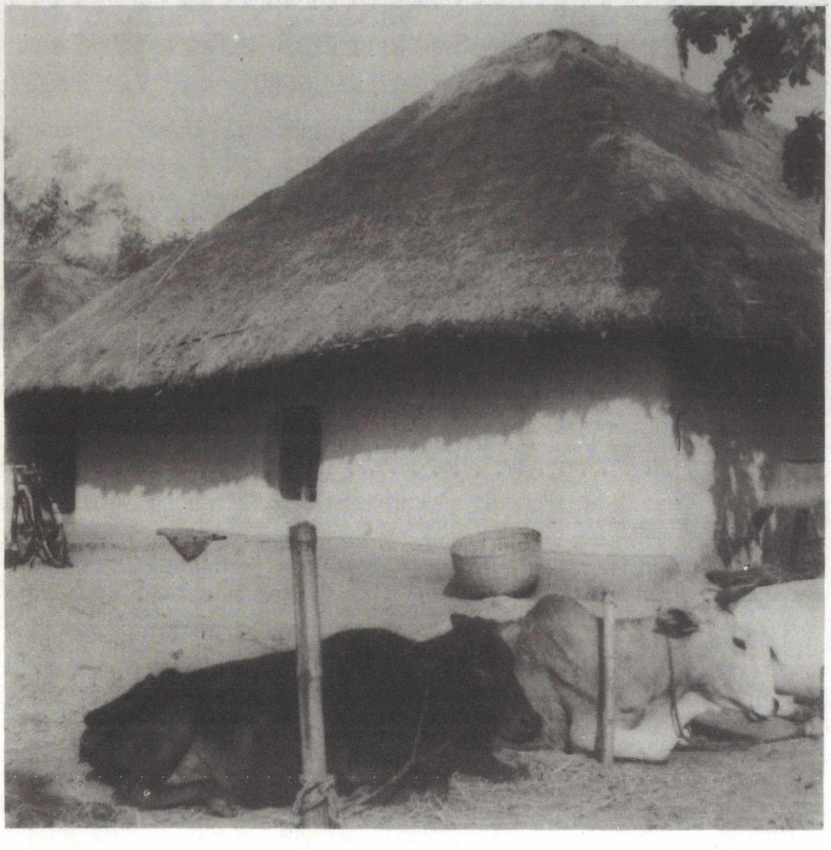

हमने कुछ भूतपूर्व शिक्षार्थियों से बातचीत की और उनसे यह सुनकर हमें बहुत अच्छा लगा कि उनके दैनिक जीवन में पढ़ने और लिखने की बहुत उपयोगिता है। उनमें से कुछ अब सूचनापट्ट, टिकट, समाचार पत्र के मुख समाचार आदि पढ़ लेते हैं। वे अपनी दिहाड़ी आदि का हिसाब किताब रख लेते हैं।

अब वे सब पढ़ना और लिखना सीख गए हैं। उन्हें सुझाव दिया गया था कि वे अपने रिश्तेदारों, महिलाओं, आदि को पढ़ना और लिखना सिखाएं और इस प्रकार साक्षरता फैलाने में मदद करें। उनमें से कुछ ने महसूस किया कि वे अपनी पत्नियों को खाली समय में पढ़ा सकते हैं। किंतु मुश्किल यह थी कि महिलाएं लगभग सदा कुछ न कुछ काम में लगी रहती थीं। उन्हें इसके लिए कुछ समय तो अवश्य निकालना चाहिए।

भूतपूर्व शिक्षार्थियों की मदद से अगले कुछ वर्षों में इस गांव के शेष सभी प्रौढ़ निरक्षरों को पढ़ाना संभव हो सकता है। यदि ऐसा न हुआ तो बहुत लंबा समय लगेगा और महिलाओं को नियमित रूप से प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में आने के लिए मनाना मुश्किल होगा।

यदि उन्हें उन्हीं के घरों में उनके पुरुषों, विशेषकर पतियों द्वारा पढ़ाया जाए तो साक्षरता जल्दी फैल सकती है। दूसरों को पढ़ाने से भूतपूर्व शिक्षार्थी निरक्षरता की स्थिति में भी फिर से नहीं जाएंगे। नहीं तो यह देखा गया कि उनमें से कई भूल गए थे जो कुछ उन्होंने सीखा था क्योंकि राज्य द्वारा चलाई जा रही परियोजनाओं में कोई अनुवर्ती कार्यक्रम नहीं है।

इस आदिवासी गांव में केवल साक्षरता का ही प्रयास किया गया है। यह अधिक अच्छा होता यदि साक्षरता को विकास के कार्यों से जोड़ने का थोड़ा प्रयास किया गया होता ताकि आदिवासी लोगों को रोजगार के बेहतर अवसर मिल सकते।

लोगों में सामाजिक और राजनीतिक दोनों प्रकार की जागरुकता है। वे जानते हैं कि उनके चारों ओर क्या हो रहा है और उस सबमें भाग लेने के लिए उनकी बड़ी आकांक्षाएं हैं। मुख्य रुकावट अपर्याप्त अवसरों की है। साक्षरता के फैलने से कुछ तो आगे प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो गया है और आशा है कि इन गांवों में अपेक्षा से पहले ही प्रगति आ जाएगी।

पेड़ ही पेड़

मिदनापुर जिले के झारग्राम में पहली चीज़ जो आकर्षित करती है वह है इस आदिवासी क्षेत्र में हर जगह पेड़ ही पेड़। जहां देश के दूसरे भाग ऐसे दृश्य के लिए तरस रहे हैं और उन्होंने बड़े पैमाने पर पेड़ लगाने शुरु किए हैं वहां झारग्राम में पेड़ बिल्कुल सहज हैं और प्राकृतिक दृश्य का ही अंग हैं।

पेड़ ही पेड़ कई प्रकार के पेड़, ऊंचे और हरे– शाल के पेड़, इमली, नीम, महुआ और दूसरे पेड़, ये सब देहात की सुंदरता बढ़ाते हैं, इसकी अर्थ व्यवस्था और जीवन को समृद्ध बनाते हैं। यहां वर्ष भर वायु ठंडी और स्वास्थ्यवर्धक होती है। शहरों में जो प्रदूषण हमें देखने को मिलता है वह यहां नहीं है। यहां की मिट्टी गहरी और कठोर है। अनेक पक्षी और पशु यहां के ताजे और स्वास्थ्यवर्धक वातावरण में और भी रंग भर देते हैं। सुबह पक्षियों की गुटर गूं और ठंडी सुखद हवा हर रोज आपको जगाती है।

इन क्षेत्रों का जीवन शांति से भरा है। हर चीज ठीक ढंग से चलती है, कहीं कोई जल्दबाजी नहीं। यहां का जीवन अधिक अर्थपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण है।

संथाल आदिवासियों ने झारग्राम वन क्षेत्र के आस पास गांवों में अपने घर बनाए हुए हैं। वे कई सदियों से इन हिस्सों में रह रहे हैं, शिकार करते हैं, खेती बाड़ी करते हैं, गाते हैं और नाचते हैं। बहुत से आदिवासी लोग अभी भी निरक्षर हैं किंतु उन्हें प्रेरित करने और प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से उन्हें उन्हीं के गांवों में साक्षरता प्रदान करने के प्रयास जारी हैं।

यह महान प्रयास है और आदिवासी पुरुषों और महिलाओं ने बदलते समय और आवश्यकताओं के अनुरुप साक्षरता की जरूरत समझनी शुरु कर दी है।

हम इस क्षेत्र के केवल तीन प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में ही जा पाए किंतु इससे हमें इन संभावनाओं की पूरी जानकारी मिल गई कि इस कार्यक्रम का विस्तार किया जाए और इसका कार्यक्षेत्र बढ़ा दिया जाए जिसमें कार्यात्मकता के कौशल शामिल हों जिससे उन्हें यथासंभव आत्मनिर्भर बनाया जा सके ताकि वे सब अपनी ही मूल धरती पर बेहतर जीवन जी सकें।

भंडारूपुर गांव के मयूर नर्तक

भंडारूपुर गांव खास झारग्राम से लगभग 35 किलोमीटर की दूरी पर है। यह बीनपुर दो विकासखंड में वेलाइदिहा ग्राम पंचायत के अंतर्गत आता है। यह संथाल आदिवासी क्षेत्र है। हाल ही के सर्वेक्षण के अनुसार इस गांव में लगभग 500 प्रौढ़ निरक्षर हैं।

पिछल ही वर्ष यहां एक पुरुष केंद्र खोला गया था और इस वर्ष फिर इसे जारी रखा गया है।

किंतु इस केंद्र में हाजिरी अधिक नहीं है जो नियमित रूप से 10-15 ही है। इसका कारण यह है कि अधिकांश शिक्षार्थी भूमिहीन श्रमिक हैं और कभी कभी उन्हें रोजगार के लिए बाहर जाना पड़ता है।

इस गांव के वासी बड़े अलमस्त हैं और हर प्रकार की लड़ाइयों का आनंद लेते हैं। जब हम वहां पहुंचे तो वहां मुर्गों की लड़ाई चल रही थी।

इस केंद्र के प्रौढ़ शिक्षार्थी केवल साक्षरता में ही श्रेष्ठ नहीं हैं बल्कि शारीरिक संस्कृति में भी श्रेष्ठ हैं। वे सब मोर पंख लगाकर, परंपरागत धोतियां पहन कर ढोल की ताल पर नाचना जानते हैं। यह बहुत श्रमसाध्य व्यायाम है किंतु गांव के युवक इसमें बहुत दक्ष हैं। वे सब इसमें रुचि और मजा लेते हैं और खुशी तथा संतोष अनुभव करते हैं।

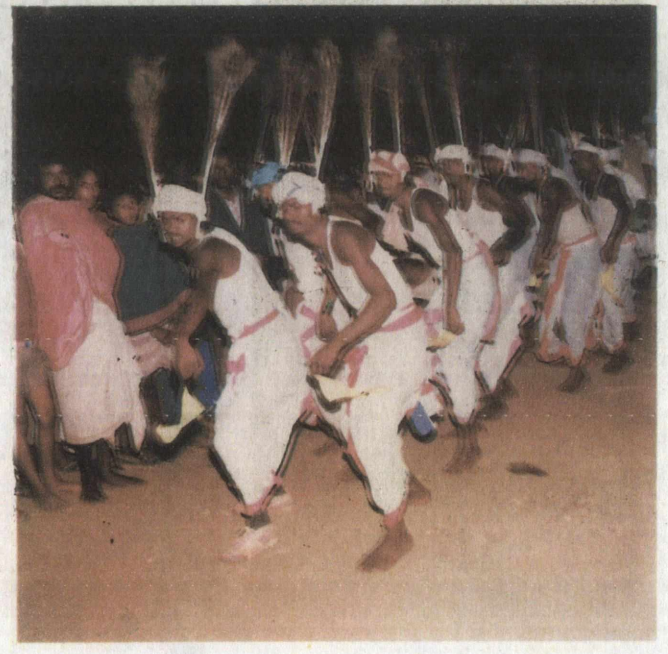

ऐथाला गांव की गायिका किशोरियां

"निशाद राज मछलियां पकड़ने के लिए गया। वह बड़ी मछली पकड़ने के लिए गहरे समुद्र में चला गया। निशाद रानी बहुत घबरा गई। वह अपने पति से अनुनय-विनय करती है कि उसकी खातिर लौट आओ"... यह भाव हैं गाने के। यह गाना प्राचीन दंतकथा से संबंधित है जो संथाल आदिवासियों के दिलों को अधिक प्यारा लगता है। इन लोगों का जीवन केवल गाने और नाचने से ही भरा हुआ है।

ताकुर मनी मुर्मु और मोहिनी स्थानीय प्रौढ़ शिक्षा केंद्र में दो प्रौढ़ शिक्षार्थी हैं जो अच्छा गाना और नाचना जानते हैं। उनका केंद्र प्राथमिक स्कूल में है जो एक बड़ी झोंपड़ी में है। यह भीतरी आदिवासी गांव स्वयं ही गहन वन क्षेत्र में स्थित है जहां जंगली हाथी आज़ादी से इधर उधर घूमते रहते हैं। गांववासी अपनी आजीविका के लिए वन की संपत्ति पर निर्भर करते हैं। वे चटाइयां और दूसरी उपयोगी चीजें बनाते हैं, पेड़ों के पत्ते इकट्ठे करके भोजन आदि परोसने के लिए पत्तलें और दोने बनाते हैं। यहां बिजली और दूसरी आधुनिक सुविधाएं बिल्कुल नहीं हैं।

यह पहला मौका है कि इस दूरदराज के गांव में प्रौढ़ शिक्षा केंद्र खोला गया है और इसमें गांववासी बहुत उत्साह दिखा रहे हैं और अपना सहयोग दे रहे हैं।

प्रौढ़ शिक्षा केंद्र को देखने आने वाले का बहुत आदर सत्कार किया जाता है। परंपरागत ढंग से उसके पांव शुद्ध जल से पखारे जाते हैं और उसे माला आदि पहनाई जाती है। महिला शिक्षार्थी भी नाचती हैं और दूसरे सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं।

इस गांव में आना और उनकी महान विरासत और परंपरा के बारे में जानना बहुत ही मनोरंजन और शिक्षा से भरपूर था।

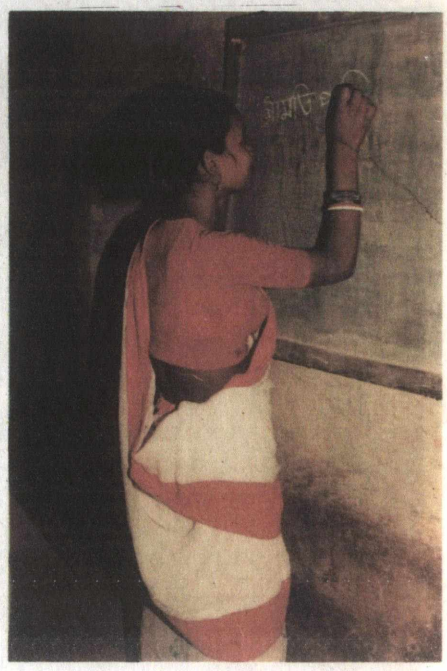

बाड़ा आरा की नृत्यांगनाएं

बाड़ा आरा जंगलों और वनों वाला हराभरा पहाड़ी क्षेत्र है। संथाल आदिवासी लोग यहां सदियों से रह रहे हैं। वे धान की खेती करते हैं, वनों में शिकार करते हैं, दुधारू पशु पालते हैं, इत्यादि। इन दिनों वे सुअर और मुर्गी पालन का काम भी करने लग गए हैं। यहां बिजली या दूसरी आधुनिक सुविधाएं बिल्कुल नहीं हैं। जीवन बड़ा शांतमय है। घर साफ सुथरे हैं।

मिट्टी से पुते हुए घर बहुत सुंदर हैं। इनकी छतें धान की पुआल से ढकी हुई हैं। घर के साथ ही पशुओं के बाड़े हैं। गलियां साफ हैं। धान की फसल निकालने के बाद उसका भंडार बड़े साफ सुथरे ढंग से घरों के आंगनों में रखा गया है, आदि। यह सब चीजें वहां जाने वाले के सामने बहुत लुभावना दृश्य प्रस्तुत करती हैं।

इस गांव में महिलाओं के लिए प्रौढ़ शिक्षा केंद्र चालू हुए यह दूसरा वर्ष है। इसकी महिला शिक्षार्थी न केवल साक्षरता में ही निपुण हैं और उनकी लिखाई सुंदर है बल्कि वे नृत्यांगनाएं भी हैं और अपनी संस्कृति और परंपरा का बहुत आदर करती हैं।

वे व्यावसायिक गायिकाएं या नर्तकियां नहीं हैं किंतु वे ऐसे किसी भी व्यावसायिक ग्रुप का मुकाबला कर सकती हैं क्योंकि उनके काम में मौलिकता है, कोई मिलावट नहीं और उन्हें उनकी कला अपनी धरती से सहज ही मिली है।

उन्हें युद्ध के बड़े बड़े ढोलों की ताल पर नाचते और बीते दिनों के गीत गाते देखकर बहुत ही मज़ा आया। इससे उन आदिवासी लोगों के इतिहास और रीति रिवाजों की याद ताज़ा हो आई।

सबसे प्रभावकारी तरीका क्या है?

पढ़ाने का कौन सा तरीका सबसे प्रभावकारी है? क्या कोई व्यक्ति दावे से कह सकता है?

इसका उत्तर कठिन है। यदि कोई तरीका एक जगह प्रभावकारी है तो हो सकता है कि दूसरी जगह वह उतना प्रभावकारी न हो। इसके अलावा प्रौढ़ शिक्षा की अनौपचारिक प्रणाली में कई तरीके प्रयोग में लाए जा रहे हैं।

प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में तो परीक्षण प्रणाली चलती आ रही है। यदि एक तरीका ठीक काम न करे तो बदल दिया जाता है। किंतु भागीदारी वाली प्रणाली को सदा वरीयता दी जाती है क्योंकि अनुदेशक को अपने शिक्षार्थियों के साथ बराबरी का बर्ताव करना होता है। वह भी उनसे सीखता है। इसलिए यह कोई एक तरफा सूचना प्रवाह नहीं होता जैसा कि औपचारिक प्रणाली में, विशेषकर हमारे स्कूलों में होता है। प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों के प्रौढ़ शिक्षार्थी कई बातों के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। केवल उन्हें पढ़ना और लिखना ही नहीं आता।

कुसोराम हेम्ब्राम, अनुदेशक, नानू बाज़ार डोंगा आदिवासी केंद्र, मोहम्मद बाजार ब्लाक, बीरभूम जिला अपने शिक्षार्थियों को भली भांति जानता है और उसने उन्हें साक्षरता प्रदान करने का बहुत ही प्रभावकारी तरीका ढूंढ़ निकाला है। वह इस क्षेत्र में पिछले पांच वर्षों से काम करता आ रहा है और इस अवधि में उसने कई शिक्षार्थियों को साक्षर बना दिया। किंतु वह केवल आठवीं कक्षा पास है। उसका केंद्र काफी बड़ी झोंपड़ी में चल रहा है जो एक प्रमुख राजनीतिक दल की है। उसने राजनीतिक मिशन के कुछ गुण ग्रहण कर लिए हैं और वह अपने संगठनात्मक कौशल का प्रयोग साक्षरता के विकास में कर रहा है। वह अतिरिक्त रुचि लेता है और अपने काम में अपने आपको तल्लीन कर देता है। शायद इसमें उसकी रुचि है और यह उसे अधिक शक्ति और संतोष प्रदान करता है।

उसे शिक्षार्थियों के साथ अपने केंद्र में काम करते देख कर सचमुच बहुत प्रेरणा मिली। उनका समूची स्थिति पर पूरा नियंत्रण है। वह उनसे उन्हीं की मूल आदिवासी बोली में बात करता है ताकि प्राइमर से सिखाए जाने वाले कई बंगला शब्दों के अर्थ उन्हें पूरी तरह समझ आ जाएं।

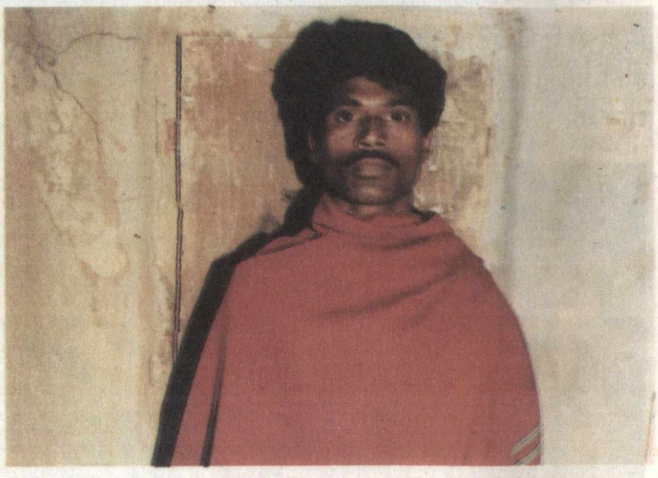

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration,
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016 D-8431
DOC, No 17-1-95
Date .....

NIEPA DC
D08431